Delhi Postal Regd. No. DL (C) - 01/1272/2021-23 R.N.I. No. 72014/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

# अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र


**अर्हत उवाच**

वितिगिंछसमावण्णा,
पंथाणं व अकोविया।

**व्रण को अधिक खुजलाना ठीक नहीं है, क्योंकि उससे कठिनाई पैदा होती है।**

❋ ❋ ❋

• नई दिल्ली • वर्ष 23 • अंक 27 • 11 - 17 अप्रैल, 2022 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 09-04-2022 • पेज : 16 • ₹ 10

## दुर्लभ मनुष्य जीवन में प्रमाद और पाप कर्म से बचें : आचार्यश्री महाश्रमण

**लाहली (रोहतक), ३ अप्रैल, २०२२**

तेरापंथ धर्मसंघ के अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी १२ किलोमीटर का विहार कर लाहली के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय पधारे। मुख्य प्रवचन में आत्मरमण साधक आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि जैन आगमों में एक है–उत्तराध्ययन सूत्र। उसके ३६ अध्ययन हैं। दसवाँ अध्ययन है, उसमें एक संदेश बार-बार दोहराया गया है, वह संदेश है–समयं गोयम मा पमायए।

आगम वाङ्मय में भगवान महावीर और गौतम का संवाद प्राप्त होता है। प्रस्तुत सूत्र में संदेश है कि गौतम! समय मात्र प्रमाद मत करो। इस संदेश को हम सभी अपने पर उपयोग कर सकते हैं कि प्रमाद नहीं करना चाहिए। कारण कि मनुष्य जन्म है, वह दुर्लभ है। जो हमें एक अवसर प्राप्त है। अवसर आदमी गँवा दे, अवसर चला जाए, फिर पछताने से क्या फायदा?

इस प्राप्त अवसर में आदमी पाप में चला जाए, तो जीवन तो पूरा हो जाएगा। फिर क्या पता यह कब मिलेगा। जो दुर्लभ है–मनुष्य जीवन, इसलिए प्रमाद नहीं करना चाहिए। लंबे काल तक प्राणियों को मनुष्य जन्म न भी मिले। सघन कर्मों का विपाक होता है, तो मानव जीवन को प्राप्त नहीं होने देते। वर्तमान में तो हमें मनुष्य जीवन प्राप्त है। इस जीवन में प्रमाद से, पापों से बचने का प्रयास करें। मानव जीवन को सुफल-सफल बनाने का प्रयास करें।

मनुष्य जन्म को सुफल और सफल बनाने के छः उपाय बताए गए हैं। मनुष्य जीवन एक वृक्ष है, उसके छः फल लग जाएँ–जिनेंद्र पूजा, अर्हत-तीर्थंकरों की भक्ति करो। णमो अरहंताणं का जप भी अर्हत भक्ति हो गई। आदमी मस्तक झुका दे, कितनी बड़ी भक्ति है यह। आदमी अपने माता-पिता के सामने सिर झुकाता है। मैंने भी दीक्षा लेने से पहले मेरी संसारपक्षीय माता के चरणों में शीश झुकाकर प्रणाम किया था। श्रद्धा से अरहंतों को नमन कर लो।

साधु के सामने तो राजा-महाराजा या राष्ट्रपति-मंत्री आदि सिर झुकाते हैं। संत त्यागी होते हैं। जिनेंद्र भगवान तो सर्वोच्च व्यक्तित्व होते हैं। दूसरा फल बताया–गुरु-पर्युपासना-गुरु की भक्ति करो। गुरु तीर्थंकर के प्रतिनिधि होते हैं। तीसरा फल बताया–सत्वानुकंपा-प्राणियों के प्रति अनुकंपा-दया की भावना। मन में दया का भाव है, तो आदमी हिंसा से बच सकता है। किसी प्राणी को बिना मतलब तकलीफ न दें।

यदि भला किसी का कर न सको तो, बुरा किसी का मत करना। चौथा फल है–सुपात्र दान। शुद्ध साधु को शुद्ध दान दो। पाँचवाँ फल बताया–गुणानुराग, गुणों के प्रति अनुराग। कोई भी आदमी है, उसमें जो गुण हैं, उन्हें ग्रहण करो। कमियों को मत देखो। छठा फल बताया–श्रुतिरागमस्य। आगम और शास्त्रों की वाणी को सुनो। ये मानव जीवन रूपी वृक्ष के फल हैं। शास्त्रों की बातें तो अमृत हैं। वर्तमान में तो मोबाइल फोन या सोशियल मीडिया भी प्रवचन सुनने का माध्यम बन जाता है। यांत्रिक सुविधा का दुरुपयोग न हो।

किसी धर्म-समाज का आदमी है, अगर वो गुणवान है, तो गुणों के प्रति हमारा प्रेम है। कमी भाई में भी है, तो कमी तो कमी है। गृहस्थ धर्म के साथ थोड़ा अध्यात्म का धर्म करने का भी प्रयास करें।

पूज्यप्रवर ने श्रावकों से पूछा कि एक तो सामने देखकर सुनते हैं, एक मोबाइल या टीवी पर देखते हैं, उसमें अंतर है क्या? श्रावकों ने अपने अनुभव बताए। सामने साक्षात् देखकर सुनने से उसके आंतरिक भाव जुड़ जाते हैं। सामने सुनने से ज्यादा अच्छा लगता है।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में कलनौर से ओ०पी० जैन, लाहली से सरपंच राजेश मल्होत्रा, जुही जैन, श्रीपाल जैन, वीणा जैन ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

आज प्रातः विहार से पहले पूज्यप्रवर जनसेवा संस्थान के अनाथ आश्रम में पधारे। स्वामी परमानंदजी ने पूज्यप्रवर का स्वागत किया। पूज्यप्रवर ने आश्रम का अवलोकन किया।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने बताया कि कड़ी मेहनत, बड़ी सोच, पक्का इरादा आदमी को आगे बढ़ाते हैं। पैर की मोच ओर ओछी सोच से व्यक्ति आगे नहीं बढ़ सकता।

## नव विक्रम संवत् 2079 में ज्ञानार्जन का सलक्ष्य प्रयास करें : आचार्यश्री महाश्रमण

**रोहतक, २ अप्रैल, २०२२**

चैत्र शुक्ला एकम्, वि०सं० २०७९ का मंगल प्रारंभ। कल फाइनेंशियल ईयर शुरू हुआ था। आज विक्रम के नए वर्ष का प्रारंभ हुआ है। वर्तमान के महावीर आचार्यश्री महाश्रमण जी आज प्रातः ११ किलोमीटर विहार कर ऋषियों की नगरी रोहतक पधारे। जैन-अजैन सभी धर्मावलंबियों ने पूज्यप्रवर का अपने नगर में पधारने पर हार्दिक अभिनंदन किया।

पूज्यप्रवर ने जन सैलाब को मंगल पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि आज विक्रम संवत् २०७९ का प्रारंभ हुआ है। वि०सं० २०७८ संपन्न हो चुका है। काल का अपना क्रम है। काल अनंत है। अतीत में अनंत काल बीत गया है और भविष्य में भी अनंत काल होता रहेगा। वर्तमान का काल तो थोड़ा सा होता है। अतीत और अनागत बड़ा है। इन दोनों की तुलना में वर्तमान बहुत छोटा सा है।

काल की लघुत्तम ईकाई समय होता है। ऐसी जैन सिद्धांत की मान्यता है। समय के टुकड़े नहीं किए जा सकते। समय तो बीत जाता है, वक्त चला जाता है, बात रह जाती है। समय की अपनी गति है, समय का कोई आरपार नहीं है, जैसे आकाश।

ज्ञान भी अनंत है। कितने ग्रंथ दुनिया में हैं। ग्रंथों के सिवाय भी ज्ञान अनंत है। जिसे केवल ज्ञान प्राप्त हो जाता है, उनका तो ज्ञान अनंत है। वह ग्रंथों में नहीं समा सकता। ज्ञान बहुत है, पर समय थोड़ा है। कितना पढ़ पाएँगे, उसमें भी विघ्न-बाधाएँ आ सकती हैं।

जैन वाङ्मय में स्वाध्याय को महत्त्व दिया गया है। सदा स्वाध्याय में रहें। जैन शासन में भी कितने शास्त्र हैं। आगम-ग्रंथ हैं। जितनी अनुकूलता हो, उन ग्रंथों का स्वाध्याय करें। साथ में मनन भी करें। शास्त्रों को कंठस्थ कर उसे सुरक्षित रखना, वो खास बात होती है। उसके लिए ज्ञान पुनरावर्तन करना, बार-बार चितारना, परिवर्तन का क्रम चलता है, तो कंठस्थ किया ज्ञान सुरक्षित रह सकता है।

आचार्यश्री तुलसी और आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने कितना ज्ञानाभ्यास किया था। पढ़ने से विचार भी शुद्ध बन सकते हैं तथा ज्ञान की समृद्धि प्राप्त हो सकती है। पुनरावर्ती नहीं करने से वह ज्ञान विस्मृति के गर्त में जा सकता है। यह एक प्रसंग से समझाया कि चितारने में आलस्य न करें।

हमारे श्रावक-श्राविकाएँ भी सीखें ज्ञान को चितारते रहें। हम अभी हरियाणा में प्रवास कर रहे हैं।

(शेष पृष्ठ २ पर)


**2621वाँ महावीर जन्म कल्याणक दिवस**

चैत्र शुक्ला-13
(14 अप्रैल, 2022)

**श्रद्धावनत: तेरापंथ टाइम्स परिवार**

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
11 - 17 अप्रैल, 2022



✦ *ध्यान व जप करना साधना है तो मेरा चिंतन है हर क्रिया में समत्व का अभ्यास रहे तो चलना, बोलना, लिखना आदि भी साधना हो सकती है।*

**—आचार्यश्री महाश्रमण**

# अपने हाथों से आध्यात्मिक सेवा कर हाथों को पवित्र बनाएँ : आचार्यश्री महाश्रमण

**खरावड़, १ अप्रैल, २०२२**

जन-जन के उद्धारक आचार्यश्री महाश्रमण जी आज प्रातः १२ किमी कवहार कर खरावड़ के सांई बाबा मंदिर परिसर में पधारे। परम पावन ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारे पास पाँच इंद्रियाँ हैं, जिन्हें ज्ञानेंद्रियाँ कहा गया है। श्रोत, चक्षु, घ्राण, रसना और स्पर्श। जो जीवन में ज्ञान की माध्यम बनती हैं। तो भोग का माध्यम भी बनती हैं। आदमी कान के द्वारा शब्द को ग्रहण करता है। चक्षु के द्वारा रूप को देखा जाता है। घ्राण के द्वारा गंध और रसना के द्वारा स्वाद लिया जाता है। स्पर्श-त्वचा से छूआ जाता है। साधु के लिए तो संयम की बात है ही, परंतु गृहस्थों के लिए भी इंद्रियों का संयम रखना अच्छा होता है। इंद्रियों का संयम नहीं होने से आदमी बढ़िया काम भी नहीं कर सकता। यह एक प्रसंग से समझाया कि इंद्रिय संयम नहीं होने से बड़ा नुकसान हो सकता है।

मरना-जीना अलग बात है। आसक्ति से पाप कर्म का बंध होता है। विषयासक्ति पाप-कर्म का बंधन करवाने वाली होती है। विषय विरक्त रहना मोक्ष की दृष्टि से अच्छा रहता है। मन या भाव ही बंधन का कारण है, भीतर का भाव ही मुक्ति का कारण है। हम इंद्रियों का संयम रखने का प्रयास करें।

कान से अच्छी उपयोगी वाणी सुनें तो अच्छा ज्ञान हो सकता है। दूसरों की माँग को भी सुनना चाहिए। अच्छे संत-व्यक्ति का प्रवचन सुनें। भक्ति के अध्यात्म के गीत सुन लें। अच्छी चीज सुनें, दूसरों की बुरी बात या निंदा न सुनें। बुरा सुनो मत, बुरा देखो मत, बुरा बोलो मत, बुरा सोचो मत। इंद्रियों का हम सदुपयोग करें।

शरीर में शक्ति है, तो दूसरों को दुःख देने का प्रयास न करें, शरीर से सेवा करें। चंदन के लेप से शरीर सुगंधित हो सकता है, आभूषण से शरीर की शोभा हो सकती है। बाहर के आभूषण पहनें या न पहनें, गुणात्मक आभूषण हम धारण करें। हाथ की शोभा कंगन से ज्यादा दान देने से होती है। आध्यात्मिक सेवा हाथ की शोभा है। हाथ से बढ़िया काम करते रहो। बढ़िया काम करेंगे तो बढ़िया फल मिलेगा। हाथ हमारे सेवा करने से पवित्र हो सकते हैं। साबुन से तो हाथ साफ हो सकते हैं। साफ होना एक बात है, पवित्र होना अलग बात है।

हाथों से आध्यात्मिक सेवा, सहयोग करें। हाथों का अच्छा उपयोग करें। किसी को सहारा दे दिया तो अच्छा सहयोग दे दिया। हाथों को पवित्र बनाना है, तो हाथों से सेवा करो।

आज यहाँ सांई बाबा मंदिर में आना हो गया है। अनेक धर्मों के अपने स्थान होते हैं। हमें अध्यात्म की प्रेरणा मिलती रहे। जीवन में अध्यात्म रहे, यह काम्य है।

पूज्यप्रवर के स्वागत में रोहतक के विधायक भारत भूषण, बतरा मंदिर के प्रधान नवीन, बजरंग दल से सुरेंद्र गोयल व चंद्रसेन ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

## नव विक्रम संवत् २०७९ में ज्ञानार्जन का सलक्ष्य...

**(प्रथम पृष्ठ का शेष)**

आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञजी भी हरियाणा पधारे थे। हमारे श्रद्धा के अच्छे घर हैं। हरियाणा के श्रावकों में तत्त्व ज्ञान का विकास होता रहे। शास्त्र और सिद्धांत की बातों का ज्ञान बढ़े। भक्ति भावना पुष्ट रहे। भक्ति श्रद्धा का बड़ा महत्त्व है। श्रद्धा एक प्रकार की गाय है, गाय को भक्ति के खूँटे से बाँध दिया, फिर गाय आगे-पीछे नहीं होगी। श्रद्धा एक जगह स्थिर रह सकती है।

श्रद्धा और ज्ञान के साथ आचार हो तो श्रावक का जीवन भी अध्यात्म की दृष्टि से सुरम्य उद्यान की तरह अच्छा जीवन बन सकता है। हरियाणा में कितने हमारे जैन समाज के लोग रहते हैं। यहाँ पर दीक्षाएँ भी हुई हैं। बड़ौदा गाँव से कितनी दीक्षाएँ हुई हैं। नए साल में स्वाध्याय भी अच्छा चले। दीक्षा ले अच्छी बात है, पर अपनी श्रद्धा, ज्ञान और आचरण का अध्यात्म में उपयोग करें तो आत्मा मोक्ष की ओर अग्रसर हो सकती है।

ज्ञान हमारे आचरणों को अच्छा बनाने वाला सिद्ध हो सकता है। ज्ञान को जाना, उसे आचरणों में ले आएँ तो ज्ञान कृत्य-कृत्य हो जाता है। आज रोहतक में आना हुआ है। यहाँ की जनता में भी खूब धर्म की भावना रहे। अध्यात्म, नैतिक मूल्यों एवं अहिंसा के प्रति अच्छी निष्ठा पुष्ट रहे, मंगलकामना।

डॉ० संतोष जैन की पुस्तक जीवन के रंग, आत्मा के संग पूज्यप्रवर के श्रीचरणों में उनके परिवार द्वारा अर्पित की गई। पूज्यप्रवर ने आशीर्वचन फरमाया।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में तेरापंथ सभाध्यक्ष कृष्ण जैन, महिला मंडल गीत, महिला मंडल अध्यक्षा नीलम जैन, तेयुप गीत, प्रेक्षाध्यान प्रशिक्षिका डॉ० संतोष जैन, छवि जैन, ज्ञानशाला, जैन समाज से नवीन जैन, राकेश जैन ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। स्थानीय सभा द्वारा आगंतुक महानुभावों का सम्मान किया।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने बताया कि हमारे धर्मसंघ षष्ठम आचार्यश्री माणकलाल जी का परिवार रोहतक जिले से ही था।

# गुस्से को अस्तित्वहीन बनाने का प्रयास करें : आचार्यश्री महाश्रमण

**सांपला, ३१ मार्च, २०२२**

अपने पावन विचारों से जन-जन को पावन बनने की प्रेरणा देने वाले महातपस्वी आचार्यश्री प्रातः ६ किमी का विहार कर सापला सिथत शिवशक्ति बाबा कालीदास धाम पधारे।

शांत सौम्य-मूर्ति आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना देते हुए फरमाया कि शास्त्र में एक श्लोक में चार चरण गुंफित किए गए हैं। इन चार चरणों से जीवन व्यवहार और आध्यात्मिक लाभ की शिक्षाएँ प्राप्त की जा सकती हैं।

पहली बात है कि बिना पूछे न बोलें। यह जीवन के लिए अच्छी बात है, पर कहीं-कहीं बिना पूछे बोलना भी महत्त्वपूर्ण हो सकता है। कोई पूछे तो क्या करें। उस समय झूठ मत बोलें। बोलो तो सही बोलो। संभव न हो तो मृषा विरत रहने का प्रयास करें। हर सत्य को बोलना भी जरूरी नहीं है। सारा सत्य सबके सामने उजागर करना उचित भी नहीं और शायद जरूरी भी नहीं होता।

दशवेआलियं में कहा गया है कि साधु मृषावाद ना बोले, पर सत्य बोलना नहीं कहा गया है। झूठ नहीं बोलना व्यापक नियम है, पर सत्य ही बोलना व्यापक नियम नहीं है। सत्य बात बोलने में विवेक रखें कि कौन सी बात बोलनी, कौन सी नहीं बोलनी है।

साधु कानों से बहुत सुनता है, आँखों से बहुत देखता है पर सारा सुना हुआ, सारा देखा हुआ साधु के लिए कहना उचित नहीं भी हो। अनुचित कहना भी नहीं चाहिए। आँख और कान का विषय अनेक चीजें बन सकती हैं, पर वाणी का विषय सब चीजें नहीं बननी चाहिए।

जीवन में कभी-कभी गुस्सा आ जाता है, पर गुस्से को पी लेना यह साधना है। कम खाओ-स्वस्थ्य रहो, गम खाओ मस्त रहो और नम जाओ-प्रशस्त रहो। कोप-गुस्से को असत्य करो। गुस्से को विफल-अस्तित्वहीन बनाने का प्रयास करो। गुस्सा मनुष्यों का शत्रु है। गुस्से को विफल करने के लिए उस समय मौन कर लो। थोड़ा दीर्घ श्वास का प्रयोग कर लो या वो स्थान एक बार छोड़ दो।

चौथी बात—प्रिय-अप्रिय स्थितियाँ आएँ, उनको धारण कर लो। राग-द्वेष में मत जाओ। प्रतिक्रिया अनपेक्षित मत करो। ज्ञाता, दृष्टा, समता का भाव रखने का प्रयास करें। ये चार बातें हमारे व्यावहारिक जीवन के लिए पथदर्शन है। इनसे आत्मा का भी हित होता है। सच्चाई सीधा-सपाट रास्ता है। झूठ का रास्ता टेढ़ा-मेढ़ा, कादा-कीचड़ वाला होता है। सच्चाई परेशान हो सकती है, परास्त नहीं। रास्ता भले कठिन हो, पर मंजिल बढ़िया हो। गृहस्थ हो या साधु रास्ता परम का ही हो।

आज चतुर्दशी है। १५ दिन पहले साध्वीप्रमुखाजी कालधर्म को प्राप्त हो गई थी। उन्होंने सारस्वत साधना की। ज्ञानात्मक, साहित्यात्मक साधना की। तीन आचार्यों के काल में उन्होंने साध्वीप्रमुखा के रूप में अपनी सेवा दी थी। साध्वी समाज पर उनका सेवा का बड़ा उपकार था। जीवन में क्या स्थिति कब बन जाए, कह पाना मुश्किल है। अंतिम समय में समता-शांति रही। हमें भी उन्हें सुनाने का अवसर प्राप्त हुआ। 'शासनमाता का सादर स्मरण करें हम' गीत का सुमधुर संगान किया।

आज चतुर्दशी पर हाजरी का वाचन हुआ। मर्यादाओं का वाचन हुआ। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

✦ *जीवन में सदुपदेश का थोड़ा-सा अंश भी उतरना शुरू हो गया तो जीवन में सत् परिवर्तन आ सकता है।*

**– आचार्यश्री महाश्रमण**

# समुद्ररूपी संसार को शरीर रूपी नौका से पार करने का प्रयास करें : आचार्यश्री महाश्रमण

**बीआईटीएस कॉलेज,**
**४ अप्रैल, २०२२**

संत शिरोमणी आचार्यश्री महाश्रमण जी कलानौर से सतीदास भाई संत आश्रम परिसर से १४ किलोमीटर विहार कर फुलपुरा के बीआईटीएस कॉलेज परिसर में पधारे। महामनीषी ने मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारी दुनिया में यातायात के अनेक साधन हैं। प्लेन, रेल, कार, बस, टैम्पो, साइकिल या स्कूटर से यात्रा की जाती है। नौका के द्वारा भी यात्रा की जाती है।

वाहन इसलिए है कि रास्ता पार हो जाए। प्रश्न है कि जलीय यात्रा के लिए नौका का उपयोग होता है। शास्त्रीय उल्लेख में भी नौका की यात्रा की व्यवस्था है। गुरुदेव तुलसी ने भी नौका से यात्रा की थी। नौका की यात्रा शास्त्र-सम्मत विधि है।

शास्त्रकार ने नौका के उदाहरण से एक बात बताई है कि यह हमारा शरीर भी एक प्रकार की नौका है। जीव-आत्मा नाविक है और यह जन्म-मरण की परंपरा रूपी संसार समुद्र है। अरणव है सागर है। इस नौका से तरें। महर्षि लोग इस नौका से तर सकते हैं।

हमें जो मानव शरीर प्राप्त है, वह बड़ा महत्त्वपूर्ण है। शरीर तो और भी जीवों को प्राप्त है, पर मानव शरीर विशेष है। पशु भी जो श्रावक होते हैं, कुछ अंशों में उनका शरीर भी नौका बन सकता है। मानव का शरीर बड़ी नौका है, पशु का शरीर छोटी नौका है। कारण मानव तो इसी जन्म के बाद मोक्ष जा सकता है, परंतु पशु उसी जन्म के बाद मोक्ष में नहीं जा सकते।

मानव का शरीर तो पाँचवें गुणस्थान से चौदहवें गुणस्थान में जाकर मुक्त हो सकता है। मानव का शरीर अच्छी नौका बन सकता है। जन्म-मरण के भवसागर को तरना है, तो कितनी तो यात्रा करनी पड़ेगी। नौका चलेगी तो उस पार पहुँचेगी। नौका में बैठ गए, चले नहीं तो पार कैसे पहुँचे। शरीर से साधना करेंगे तभी जन्म-मरण के संसार सागर से तर पाएँगे।

प्रश्न है कि किस तरह इस नौका का उपयोग करें? संयम-तप के द्वारा इस नौका को पार लगाएँ। तभी भवसागर पार हो सकता है। संयम-तप को नहीं जानता तो कैसे सागर पार होगा।

इस शरीर को नौका कहा गया है, इसमें आश्रवरूपी छेद हो जाए तो नौका डुबोने वाली हो सकती है। ये शरीर रूपी नौका सक्षम अच्छी है या नहीं, वह कैसे? जब तक बुढ़ापा पीड़ित न करे, जब तक व्याधि शरीर में न बढ़ें, जब तक इंद्रियाँ हीन न हो तब तक धर्म का समाचरण कर लो।

शरीर की सक्षमता में तीन बाधाएँ हैं–पहली बाधा है–बुढ़ापा। दूसरी बात है कि बुढ़ापा तो नहीं आया पर बीमारी लग गई। तो आदमी इतना काम नहीं कर सकता। व्याधियाँ शरीर में न बढ़ें।

तीसरी बात है–इंद्रियाँ हीन न हों। इंद्रियाँ कमजोर पड़ जाए तो असक्षमता आ सकती है। इस तरह ये तीन बाधाएँ हैं। जब तक ये तीन बाधाएँ शरीर में नहीं हैं, तब तक जिंदगी में बढ़िया काम करना हो सो कर लो। बाद का ज्यादा भरोसा नहीं करना चाहिए। जब तक शरीर स्वस्थ है, धर्म की अच्छी साधना कर लो। शरीर अनुकूल है, तो काम हो रहा है।

परमपूज्य आचार्य तुलसी ने पूर्वांचल और दक्षिणांचल की लंबी यात्राएँ ६० वर्ष की उम्र आने से पहले कर ली थी। शरीर की भी सक्षमता थी। गृहस्थ भी परिवार, समाज का व्यवहार निभाते हुए धर्म की साधना भी करें। साधु के भी सक्षमता रहते हुए सेवा का कर्जा उतर जाए। मार्ग सेवा भी लोग करते हैं, वो सक्षमता हो तो हो सकती है। शास्त्रकार ने कहा कि जब तक बुढ़ापा पीड़ित न करे, जब तक व्याधि न बढ़े, जब तक इंद्रियाँ हीन न हो, तब तक धर्म का समाचरण कर लो।

शरीर नौका है, इस नौका को चलाएँ, इसका उपयोग करें। नौका अभी ठीक है, तो इससे भवसागर को पार करने का प्रयास करो।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने बताया कि जैन धर्म में अहिंसा का बड़ा महत्त्व है, उसको विस्तार से समझाया।

# अणुव्रत काव्य धारा का आयोजन

**उदयपुर।**

अणुव्रत समिति द्वारा अणुव्रत विश्व भारती सोसाइटी के आह्वान पर अणुव्रत स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में महाप्रज्ञ विहार भुवाना के सभागार में अणुव्रत काव्य धारा का आयोजन किया गया। जिसमें देश के ख्यातनाम कवियों एवं शायरों ने अपनी रचनाएँ प्रस्तुत की।

समिति के महामंत्री राजेंद्र सेन ने अणुव्रत विश्व भारती सोसाइटी द्वारा अणुव्रत स्थापना दिवस के अवसर पर प्रत्येक अणुव्रत समिति द्वारा अणुव्रत काव्य धारा का आयोजन के निर्देश के बारे में जानकारी दी। इस अवसर पर समिति के अध्यक्ष आलोक पगारिया ने सभी उपस्थित समिति, समाज तथा विभिन्न संगठनों के पदाधिकारियों एवं कवियों का स्वागत किया। समिति के संरक्षक गणेश डागलिया ने अणुव्रत समिति के स्थापना के उद्देश्य को बताते हुए समिति द्वारा किए जा रहे कार्यों के बारे में अवगत कराया। इस अवसर पर तेरापंथ सभा के अध्यक्ष अर्जुन खोखावत ने समाज द्वारा आमजन के लिए किए जा रहे कार्यक्रमों के बारे में बताया। काव्य धारा में आमंत्रित कवियों का परिचय समिति के महामंत्री राजेंद्र सेन ने दिया। काव्य धारा के आरंभ में मंगलाचरण रश्मि पगारिया, इंदिरा सिंघवी, कांता सिंघवी, कांता कोठारी और आशा कुनावत ने प्रस्तुत किया।

काव्य धारा का शुभारंभ डॉ० मधु अग्रवाल ने माँ सरस्वती की वंदना प्रस्तुत की। गजल गायक नितिन मौलिक, व्यंग्यकार-गीतकार दिनेश दीवाना, शायर मुस्ताक चंचल, काव्य धारा में कवि सम्मेलन का संचालन कर रही गजल एवं गीतकार डॉ० शकुंतला सरूपरिया आदि सभी ने अपनी प्रस्तुति द्वारा काव्य धारा में चार-चाँद लगा दिए।

समारोह में तेयुप अध्यक्ष मनोज लोढ़ा, महिला मंडल अध्यक्ष सीमा पोरवाल, टीपीएफ अध्यक्ष मुकेश बोहरा, अणुव्रत समिति के सलाहकार शब्बीर के मुस्तफा, अरुण कोठारी, डॉ० निर्मल कुनावत, सुनील खोखावत, अशोक राठौड़, अरविंद चित्तौड़ा आदि समाज के महिला एवं पुरुष उपस्थित थे।

# ज्ञानशाला कार्यक्रम का आयोजन

**कोलकाता।**

प्रेक्षाध्यान का वृहद कोलकाता एवं दक्षिण बंगाल ज्ञानशाला का एक कार्यक्रम आयोजन किया गया। उसमें राजेंद्र मोदी ने सुंदर तरीके से अनुप्रेक्षा की विस्तारपूर्वक व्याख्या की। सायरा जैन और अभिलाषा डांगी ने ज्ञानशाला के लगभग पूरा Syllabus Touch किया। महाप्रयाण ध्वनि, नमस्कार मुद्रा, कायोत्सर्ग, श्वास प्रेक्षा एवं आसन आदि की विधि एवं उसके लाभ बताए। उन सभी के प्रति आभार।

आंचलिक समिति के सदस्य अंजू गुलगुलिया ने कार्यक्रम का प्रारंभ नमस्कार महामंत्र से किया एवं अपने भाव व्यक्त किए। आंचलिक संयोजिका प्रेमलता चोरड़िया ने प्रेक्षाध्यान की महत्ता को बताया। बहरमपुर की प्रशिक्षिका वर्षा ने कार्यक्रम का संयोजन किया। उत्तर हावड़ा की प्रतिशिक्षिका ममता ने डिजिटल कार्य में पूर्ण सहयोग किया। राजेंद्र मोदी ने जिज्ञासाओं का समाधान दिया। ज्ञानशाला परिवार द्वारा सभी का आभार प्रकट किया गया।

**महावीर जयंती पर विशेष**

# महावीर वाणी आज भी प्रासंगिक

❐ **मुनि कमल कुमार** ❐

भारत देश वीर और वीरांगनाओं की जन्मभूमि है इस भूमि पर अनेक वीरों ने जन्म लेकर देश का गौरव बढ़ाया है। उन्हीं वीरों में एक नाम भगवान महावीर का आता है। जिनका जन्म विहार प्रांत में क्षत्रिय कुंड नगर में हुआ था। जिनके पिताजी का नाम राजा सिद्धार्थ और माता का नाम त्रिशला था।

तीर्थंकरों को गर्भकाल से ही तीन ज्ञान होते हैं–मतिज्ञान, श्रुतज्ञान और अवधिज्ञान। चौबीस तीर्थंकरों में केवल महावीर ही ऐसे तीर्थंकर हुए जो दो माताओं के उदर में पले। पहले देवानंदा ब्राह्मणी की कुक्षि में रहे फिर माता त्रिशला की कुक्षि में आए जन्मदाता माता त्रिशला होने के कारण त्रिशला सुत कहलाए। जब वे माता त्रिशला के उदर में थे उस समय उन्होंने सोचा मेरे हलन-चलन से माता को पीड़ा होती है, इसलिए उन्होंने अपने अंगों को नियंत्रित कर लिया। माता ने सोचा पेट में हलन-चलन बंद हो गया। लगता है बच्चे का आयुष्य पूर्ण हो गया और माता त्रिशला विलापात करने लगी। माता को आर्त्तध्यान में मग्न देखकर महावीर ने सोचा–मैंने तो माँ की पीड़ा को समाप्त करने के लिए अंगों पर नियंत्रण किया मगर माँ मोहवश आर्त्तध्यान कर रही है। महावीर ने पुनः पूर्ववत हलन-चलन प्रारंभ किया और माँ प्रसन्न हो गई, परंतु महावीर उस समय अवधिज्ञानी थे वीतरागी नहीं थे, उन्होंने गर्भकाल में ही यह संकल्प कर लिया कि जब तक माता-पिता जीवित रहेंगे मैं दीक्षा नहीं लूँगा। क्योंकि थोड़ी देर हलन-चलन बंद करने से ही माँ दुखी हो रही है अगर मैं दीक्षित होऊँगा तो वो सहन नहीं कर सकेगी।

भगवान महावीर का जन्म चैत्र शुक्ला त्रयोदशी के दिन हुआ। राजा सिद्धार्थ और माँ त्रिशला के ही नहीं पूरे राज्य में खुशी का माहौल बना इतना ही नहीं तीर्थंकरों के पाँच कल्याणक होते हैं–च्यवन, जन्म दीक्षा-केवलज्ञान और निर्वाण पाँचों समय देव उत्सव मनाते हैं। नारकीय जीव भी प्रसन्न होते हैं। भगवान महावीर का जन्म नाम वर्धमान रखा गया, क्योंकि उनके जन्म के साथ ही राज्य में चारों ओर समृद्धि बढ़ी अनमि राजा भी सिद्धार्थ चरणों में नतमस्तक हो गए।

वर्धमान का बाल्यकाल भी सबको प्रभावित करने वाला था। एक बार वे अपने साथियों के साथ खेल खेल रहे थे। उस समय कोई सर्प आ गया। सर्प को देखकर सभी बालक भयभीत हो गए। इधर-उधर दौड़ गए। परंतु वर्धमान ने उस सर्प को पकड़कर बाहर फेंक दिया, यह देखकर सभी बालक वर्धमान की वीरता को देखकर आश्चर्यचकित हो गए।

पढ़ने के लिए जब गए तो पहले ही दिन उनके विलक्षण ज्ञान को देखकर अध्यापक भी उनको पढ़ाने में अपने आपको असमर्थ महसूस करने लगे। उन्हें स्कूली पढ़ाई की कोई आवश्यकता ही महसूस नहीं हुई। क्योंकि उनके पास जन्मजात ही तीन ज्ञान थे।

युवा होने पर उनकी शादी भी की गई समयांतर में एक लड़की भी हुई जिसकी भी समय आने पर शादी कर दी गई। इस प्रकार महावीर गृहस्थ कार्य से निवृत्त हो गए। जब माता-पिता का स्वर्गवास हो गया तब उन्होंने सोचा–अब मेरा संकल्प भी पूरा हो गया और अब मुझे जल्दी ही दीक्षा लेनी है। उन्होंने अपनी भावना बड़े भाई नंदीवर्धन के सम्मुख रखी परंतु अनुमति नहीं मिलने के कारण दो वर्ष घर में रहकर ही साधना करते रहे। उनकी वैराग्य वृत्ति को देखकर दो वर्ष पश्चात जब भाई से अनुमति मिली तब आपने मृगसरबदि दशमी के दिन सिद्धों की साक्षी से दीक्षा स्वीकार की बारह वर्ष की घोर तपस्या के पश्चात आपको केवलज्ञान की प्राप्ति हुई। केवलज्ञान की प्राप्ति के पश्चात आपने प्रवचन प्रारंभ किया। आपका दिव्य संदेश प्राणीमात्र के कल्याण के लिए था। भगवान महावीर के समवसरण में सिंह और बकरी भी पास बैठकर उनकी वाणी सुनते, उनके सदुपदेश से चौदह हजार संत और छत्तीस हजार साध्वियाँ बनीं। भगवान महावीर ने साधुओं के लिए महाव्रतों की व्यवस्था दी, वैसे ही गृहस्थों के लिए अणुव्रतों की बात बताई। महावीर ने अहिंसा, संयम तप की जो बात बताई, वह आज भी प्रासंगिक है। जन-जन के लिए आदेय है। जितनी भी समस्याएँ पैदा होती हैं, उसके मूल में देखें तो हिंसा असंयम भोग का ही साम्राज्य देखने को मिलता है। हम अपने जीवन में अहिंसा, संयम तप की आराधना साधना करके सुख-शांति, आनंद को प्राप्त कर सकते हैं, महावीर जयंती पर महावीर के गुणगान करके ही नहीं महावीर की वाणी को अपनाने का प्रयास करें। जिससे आत्मा, परिवार, समाज, देश और विश्व का कल्याण हो सके।

✦ *समता की साधना के द्वारा आधि और उपाधि से मुक्त हुआ जा सकता है तथा उससे व्याधि की जड़ें भी निर्मूल हो सकती हैं।*

**– आचार्यश्री महाश्रमण**

✦ *उपदेश सुनने की भावना भी अच्छी बात है। उपदेश की सौ बातें सुनी जाएँगी तो उसमें से दो-चार बातें जीवन में हृदयंगम भी हो सकती हैं, उतर भी सकती हैं।*

**—आचार्यश्री महाश्रमण**

# महिला मंडल के विविध आयोजन

## परचम केसरिया शक्ति का कार्यशाला का आयोजन

**लूणकरणसर।**

अभातेममं द्वारा निर्देशित परचम केसरिया शक्ति का कार्यशाला का आयोजन लूणकरणसर महिला मंडल द्वारा तेरापंथ भवन में रखी गई। शासनश्री साध्वी पानकुमारी जी का सान्निध्य रहा। महिला मंडल एवं कन्या मंडल की बहनों का तिलक लगाकर एवं पट्टा पहनाकर स्वागत किया। कन्या मंडल एवं महिला मंडल की बहनों ने स्वागत गीत की प्रस्तुति दी।

महिला मंडल ने प्रेरणा गीत से कार्यक्रम की शुरुआत की। स्वागत भाषण अध्यक्षा चंदा देवी भूरा ने किया। नीतू वेद ने राष्ट्रीय अध्यक्ष के सफलतम कार्यकाल की भावना व्यक्त की। तेरापंथ सभा के मंत्री प्रेम बैद व पदाधिकारी बहनों से महिला मंडल के विकास के विषय में अपनी भावना व्यक्त की। तत्पश्चात साध्वी मंगलयशा जी ने बताया कि वीरता का प्रतीक केसरिया रंग है ओर गुरु की दृष्टि में जो आराधन होता है वहाँ कुछ-न-कुछ अवश्य प्राप्त होता है।

कार्यकारिणी बहन विनीता बैंगानी एवं सारिका बागरेचा ने अध्यक्ष चंदा देवी भूरा एवं मंत्री शांति देवी बोथरा का आभार व्यक्त किया। अभातेममं की अध्यक्ष नीलम सेठिया ने महिला संगठन केसरिया परिधान महिमा व उसके उपयोग के बारे में बताया। शांति देवी बोथरा ने सभी का आभार व्यक्त किया एवं कार्यशाला का संचालन मंडल की कोषाध्यक्ष मोनिका देवी नवलखा ने किया। केसरिया परिधान में बहनों की अच्छी उपस्थिति रही।

## अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस एवं प्रेरणा सम्मान समारोह

**अमराईवाड़ी।**

अभातेममं के निर्देशन में तेममं द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के साथ उत्तर गुजरात प्रभारी अदिति सेखानी की अध्यक्षता में हुई। प्रेरणा गीत के द्वारा महिला मंडल की बहनों ने मंगलाचरण किया।

मंडल की अध्यक्षा संगीता सिंघवी ने सभी का स्वागत किया। सभा अध्यक्ष रमेश पगारिया, मंत्री गणपत हिरण, अभातेयुप के कार्यसमिति सदस्य सतीश चोरड़िया, तेयुप के अध्यक्ष दिलीप सिसोदिया ने महिलाओं को शुभकामनाएँ दी।

प्रेरणा सम्मान का वाचन अभातेममं की कार्यसमिति सदस्य नीतू बैद ने किया। भावना गजेंद्र लोढ़ा को प्रेरणा सम्मान से सम्मानित किया गया। अदिति सेखानी ने अनेक उदाहरण और किस्सों के माध्यम से नारी की महत्ता बताई।

मुख्य अतिथि नीतू बैद एवं विशेष अतिथि रिची खाब्या की उपस्थिति रही। वंदना पगारिया, ममता कच्छारा, उपासिका मंजु गेलड़ा, आराध्या बाबेल एवं महिमा बाफना सभी ने कविता, भाषण आदि के माध्यम से अपने विचार रखे।

कार्यक्रम का संचालन महिला मंडल की पूर्व मंत्री सेजल मांडोत एवं मंत्री लक्ष्मी सिसोदिया ने किया तथा आभार ज्ञापन मंत्री लक्ष्मी सिसोदिया ने किया।

## अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर कार्यक्रम

**पुर।**

शासनश्री मुनि रविंद्र कुमार जी एवं मुनि अतुल कमार जी के सान्निध्य में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का कार्यक्रम तेममं एवं कन्या मंडल की सहभागिता में तेरापंथ भवन में आयोजित हुआ। सर्वप्रथम रैली का आयोजन हुआ, जो मुनिद्वय से मंगलपाठ सुनकर जयघोषों के साथ नगर की गलियों, बाजारों में होते हुए वापस तेरापंथ भवन पहुँची।

मुनि रविंद्र कुमार जी ने कहा कि नारी सद्गुणों की खान है, नारी सहिष्णुता की प्रतिमूर्ति है। आवश्यकता है नारी अपने सामर्थ्य और क्षमता को पहचाने। मुनि अतुल कुमार जी ने कहा कि महिला अबला नहीं, सबला है। वह खुद एक शक्ति है। लेकिन उसे बाहर आने में घर से प्रोत्साहन मिलना चाहिए।

कार्यक्रम में महिला मंडल मंत्री आरती डांगी ने कहा कि पुर महिला मंडल एक आदर्श महिला मंडल है। सामंजस्य और सौहार्द इसका आधार है। कन्या मंडल से प्रतीक्षा नैनावती ने कहा कि आत्मविश्वास के साथ अगर आगे बढ़ें तो सफलता निश्चित मिलती है।

तेरापंथी सभा संस्था अध्यक्ष सुरेश सिंघवी ने कहा कि नारी शक्ति विकास की दिशा में बढ़ रही है। इस अवसर पर महिला मंडल अध्यक्षा सीमा सिंघवी सहित महिला मंडल एवं कन्या मंडल की पूरी टीम उपस्थित थी। मंगलाचरण गीत आरती डांगी और पूजा कोठारी ने पस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन राजतिलक खाब्या ने किया।

## अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस एवं प्रेरणा सम्मान समारोह

**हैदराबाद।**

अभातेममं के निर्देशन में, तेममं द्वारा प्रेरणा सम्मान समारोह एवं अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन तेरापंथ भवन डीवी कॉलोनी में किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के सामुहिक संगान से की गई। अध्यक्ष अनिता गीड़िया ने सभी का स्वागत किया। तेरापंथी सभा अध्यक्ष सुरेश सुराणा, तेयुप अध्यक्ष प्रवीण श्यामसुखा, टीपीएफ अध्यक्ष मोहित सुराणा, अणुव्रत समिति मंत्री अशोक मेड़तवाल एवं मुख्य अतिथि सरोज देवी अशोक हिरावत ने महिला मंडल को शुभकामनाएँ प्रेषित की। कार्यक्रम का संचालन हर्षलता दुधोड़िया ने किया। इसमें वीनू नाहटा, संगीता दुगड़, संतोष डागा, मंजु लूनावत, कविता बेगवानी, विनीता बोथरा, रिंकू डागा आदि ने भाग लिया।

सिंगल पेरेंट्स मदर के लिए प्रेरणा सम्मान प्रेम बैद को उनकी विशिष्ट योग्यता के लिए प्रदान किया गया। प्रेम बैद और रेखा धारीवाल ने She Speaks के अंतर्गत अपनी भावनाओं को व्यक्त किया।

मंडल द्वारा तेरापंथी उद्यमी बहनों की एक दिवसीय प्रदर्शनी-सह बिक्री के आयोजन का अवसर भवन में प्रदान किया गया। डॉ० अमित पांचाल एवं उनके सहयोगी सदस्यों द्वारा सुजोक थैरेपी कैंप निःशुल्क लगाया गया। सरोज देवी, अशोक हीरावत, चंदा जैन, विमला खटेड़, प्रेम सुराणा, ममता छाजेड़, पुखराज चोरड़िया, डेकोरेशन प्रियंका दस्सानी एवं अन्य का अच्छा आर्थिक सहयोग रहा। कार्यक्रम का संचालन वर्षा बैद एवं पूर्व अध्यक्ष रीता सुराणा ने किया। आभार ज्ञापन मंत्री श्वेता सेठिया ने किया।

कार्यक्रम की संयोजिका पूर्व अध्यक्ष रीता सुराणा, उपाध्यक्ष शकुंतला बुच्चा, सहमंत्री शीतल खाब्या, मंजुला पटावरी, रूबी दुगड़, कन्या मंडल सह-प्रभारी चंदन कोठारी, वर्षा बैद, सुमन चोरड़िया, सरिता बोथरा रही। किशोर मंडल के खुशाल भंसाली, अरिहंत गुजरानी का टेक्निकल सहयोग रहा।

संरक्षिका सुशीला संचेती, संपत सिंघी, परामर्शक चंद्रा सुराणा, पूर्व अध्यक्ष प्रेम पारख आदि की उपस्थिति रही।

## रूपांतरण शिल्पशाला कार्यक्रम का आयोजन

**उधना।**

साध्वी सम्यक्प्रभाजी के सान्निध्य में साध्वीश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र एवं मंगलाचरण से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। अध्यक्षा जसु बाफना ने सभी का स्वागत किया। साध्वी सम्यक्प्रभाजी ने कार्यशाला के विषय को बताया। हमारी भावना कैसी होनी चाहिए, मनुष्य के जीवन में लेश्या बहुत ही महत्त्वपूर्ण होती है। हमें हमारे भाव शुद्ध रखने का प्रयास करना चाहिए।

उपासिका दिलखुश मेड़तवाल ने कहानी के माध्यम से समझाया। उपासिका सीमा एम० डांगी, अभातेममं सदस्या श्रेया बाफना की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन सुमन चंडालिया ने किया तथा आभार ज्ञापन वनिता लोढ़ा ने किया।

## बिना व्रत के व्यक्ति का जीवन शून्य

**नोखा।**

मानव रत्न अनमोल हीरा मिला हैं मात्र भोग-विलास, ऐसो-आराम में व्यर्थ गँवाना मूर्खता है। सब कुछ होते हुए संयम रखना, व्रत रखना, विशेष बात है। बिना संकल्प वाले का जीवन शून्य होता है। पूर्व भव की कमाई खर्च कर रहे हैं। इस भव में सुकृत करणी करके व्रत अपनाकर जीवन में उज्ज्वलता लानी अपेक्षित है। यह उद्गार मुनि डॉ० अमृत कुमार जी ने समझाते हुए बारह व्रत पर प्रकाश डाला।

मुनि उपसम कुमार जी ने कहा कि युवा अवस्था सबसे अधिक श्रम, परिश्रम और शक्ति संपन्न होती हैं मानव आत्म कल्याण में संलग्न रहे। माला, जप, ध्यान नित्य करें।

## अभातेयुप योगक्षेम योजना

योगक्षेम

| | |
|---|---|
| ✳ अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र - 2019-2021 | 51,00,000 |
| ✳ श्री अशोक श्रेयांस बरमेचा, तारानगर-हैदराबाद | 11,00,000 |
| ✳ श्री बच्छावत परिवार, सरदारशहर-जयपुर | 5,00,000 |
| ✳ श्री बसंत अर्पित नाहर, महेंद्रगढ़-उधना | 5,00,000 |
| ✳ श्री राकेश कठोतिया, लाडनूं-मुंबई | 5,00,000 |
| ✳ श्री रूपचंद कोडामल जैनसुख दुगड़, बीदासर-मुंबई | 5,00,000 |
| ✳ श्री शंकरलाल विमल विनीत पितलिया, भीलवाड़ा | 5,00,000 |
| ✳ श्री शांतिलाल पारसमल दक उमरी, उधना-सूरत | 5,00,000 |
| ✳ श्री सुमतिचंद गोठी, सरदारशहर-मुंबई | 5,00,000 |
| ✳ श्री विपिन जैन पारख, सिरसा-मुंबई | 5,00,000 |
| ✳ श्री राजकुमार गौतम प्रसाद जैन, बेलपाड़ा-उड़ीसा | 5,00,000 |
| ✳ श्री सागरमल दीपक विमल कमलेश श्रीमाल, देवगढ़-बड़ौदा | 5,00,000 |
| ✳ श्री जैनसुख दीपक बोथरा, छापर-सिलीगुड़ी | 5,00,000 |

## दो धाराओं का आध्यात्मिक मिलन

**भीलवाड़ा।**

श्री मोहन खेड़ा तीर्थ विकास प्रेरक आचार्य श्रीमद् विजय ऋषभचंद सूरीश्वरजी महाराज के कार्यदक्ष मुनिराज पीयूष विजय म०सा० गुरुप्रेमी मुनि जिनचंद विजय का आर०सी० व्यास कॉलोनी, भीलवाड़ा में जयाचार्य भवन में विराजित शासनश्री मुनि हर्षलाल जी स्वामी 'लाछूड़ा' व सहवर्ती मुनि आनंद कुमार जी 'कालू' का आध्यात्मिक मिलन हुआ व धर्मसंघ पर चर्चा हुई।

शासनश्री मुनि हर्षलाल जी स्वामी ने कहा कि भक्त में भक्ति और शक्ति होना आवश्यक है। मुनिश्री ने मुनिराज पीयूष विजय म०सा० के वर्षीतप व गुरुप्रेमी मुनि जिनचंद विजय के जन्मदिवस पर अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित की।

मुनि आनंद कुमार जी 'कालू' ने कहा कि संतों का मिलन भक्ति भावना व प्रमोद भावना प्रेरणादायी है, आपकी संयम यात्रा सुखद रहे। दोनों संतों ने तेरापंथ धर्मसंघ को विलक्षण धर्मसंघ बताया। इस अवसर पर महेंद्र ओस्तवाल, प्रमोद धूपिया, भेरूलाल ओस्तवाल, नेम संघवी, तेज सिंह नाहर, एकता, नीतू व विनीता ओस्तवाल सहित समाज के अनेक श्रावम-श्राविकाएँ उपस्थित थे।

# साध्वीप्रमुखाश्री जी की स्मृति सभा के आयोजन

## करुणा की मूर्ति थी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी

**भीलवाड़ा।**

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ की विशिष्ट विभूति, शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी की स्मृति सभा का आयोजन आर०सी० व्यास कॉलोनी में शासनश्री मुनि हर्षलालजी 'लाछूड़ा' की सन्निधि में हुआ।

स्मृति सभा का शुभारंभ शासनश्री मुनि हर्षलाल जी स्वामी के महामंत्रोच्चार के साथ हुआ। तेरापंथ महिला मंडल के द्वारा गीत प्रस्तुत किया।

शासनश्री मुनि हर्षलाल जी स्वामी ने कहा कि शासनमाता महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी की महत्ता इसी बात से प्रकट होती है कि स्वयं आचार्यश्री महाश्रमण जी ने एक दिन में ४७ किमी तक का विहार करके दर्शन देने दिल्ली पहुँचे। शासनश्री ने कहा कि साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी एक प्रभावशाली वक्ता और करुणा की मूर्ति थी।

मुनि पारस कुमार जी ने कहा कि साध्वीप्रमुखाश्री ने तेरापंथ धर्मसंघ को अविस्मरणीय सेवाएँ प्रदान की। तीन आचार्यों के सान्निध्य में वे ५० से भी अधिक वर्षों तक साध्वीप्रुखा के पद पर रही।

मुनि आनंद कुमार जी ने उनकी स्मृति में कहा कि शासनमाता एक ऐसी विलक्षण कीर्ति की धनी रही हैं, जिनमें आध्यात्मिक निष्ठा, गुरु निष्ठा और संघ निष्ठा की त्रिवेणी निरंतर प्रवाहित होती रही है। दीक्षा के ५०वें वर्ष की संपन्नता पर लाडनूं में अमृत महोत्सव के दौरान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने आपको 'शासनमाता' का अलंकरण दिया।

मुनि शांतिप्रिय जी ने साध्वीप्रमुखाजी के बारे में कहा कि शासनमाता 'माँ' का प्रतीक है, उनका व्यक्तित्व व कर्तृत्व तेरापंथ धर्मसंघ के लिए बेजोड़ रहा है। इस अवसर पर अनेक श्रावकों व श्राविकाओं ने भी अपने भाव व्यक्त किए। बाल कलाकार दक्ष बड़ोला व हिरेन चोरड़िया ने मधुर गीतिका प्रस्तुत की। संघगायक संजय-विनीता भानावत, वर्षा बाफना व अपेक्षा पामेचा ने गीतिका प्रस्तुत की। तेरापंथ सभा अध्यक्ष भेरूलाल चोरड़िया, तेयुप अध्यक्ष संदीप चोरड़िया, टीपीएफ अध्यक्ष राकेश सूतरिया, तेमम अध्यक्षा मीना बाबेल, अणुव्रत समिति अध्यक्ष आनंदबाला टोड़रवाल व प्रकाश सूतरिया, सुशील आच्छा, अनिल चौधरी, लक्ष्मी लाल झाबक, चंद्रकांता चोरड़िया, अंजना रांका ने अपने भावों की प्रस्तुति दी। मंच का संचालन एवं आभार व्यक्त आचार्य भिक्षु सेवा संस्थान के मंत्री दिलीप रांका ने किया।

# शासनमाता की स्मृति सभा का आयोजन

**पालघर।**

मुनि हिमांशु कुमार जी, मुनि हेमंत कुमार जी के सान्निध्य में शासनमाता असाधारण साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी की स्मृति सभा का आयोजन तेरापंथ भवन में किया गया। मुनि हिमांशु कुमार जी ने प्रेरणा पाथेय प्रदान किया एवं शासनमाता के प्रति मुनिश्री ने भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की।

मुनि हेमंत कुमार जी ने कहा कि शासनमाता ने कुशलप्रशासक, गहन जनसंपर्क, धर्म आराधना व साहित्य लेखन आदि गतिविधियों से भरपूर जैन जीवन के चरमोत्कर्ष को प्राप्त किया। विलक्षण शासनमाता साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी को विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित की।

सभा अध्यक्ष नरेश राठौड़, मंत्री दिनेश राठौड़, महिला मंडल अध्यक्षा अनोखाबाई बदामिया, तेयुप अध्यक्ष प्रकाश बाफना, अभातेममं कार्य समिति सदस्य संगीता बाफना आदि ने श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम का संचालन मुनि हेमंत कुमार जी ने किया। कार्यक्रम में सभा, महिला मंडल, तेयुप, अणुव्रत समिति, ज्ञानशाला के बच्चों के साथ सफाला, बोईसर के श्रावकों की उपस्थिति रही।

# मंगल प्रवेश

**शिवकाशी।**

साध्वी उज्ज्वलप्रभाजी एवं सहवर्ती साध्वी अनुप्रेक्षाजी, साध्वी प्रबोधयशा जी, साध्वी सन्मतिप्रभाजी का शिवकाशी (तमिलनाडु) में मंगल प्रवेश हुआ। सभी श्रावक-श्राविकाओं की अच्छी संख्या में उपस्थिति रही।

मदुरै तिरुमंगलम् से शिवकाशी तक ५ दिन की रास्ते की सेवा के साथ श्रावक-श्राविकाओं ने पैदल सेवा का लाभ भी लिया। तेमम सहमंत्री दिव्या आंचलिया ने बताया कि साध्वीश्री जी का मंगल प्रवेश सुक्ला ट्रांसपोर्ट से शोभा यात्रा के साथ तेरापंथ सभा के वरिष्ठ श्रावक नवरत्नमल डागा के निवास पर हुआ। तेरापंथ सभा, महिला मंडल ने साध्वीवृंद का स्वागत किया।

✦ *भक्ति भी साधना का एक प्रयोग है। भगवान की भक्ति करना अच्छा है, किंतु उसके साथ आचरण भी पवित्र रहे।*
**– आचार्यश्री महाश्रमण**

# अष्ट दिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर का आयोजन

**लाडनूं।**

जैन विश्व भारती के आचार्य तुलसी अंतर्राष्ट्रीय प्रेक्षाध्यान केंद्र में अष्ट दिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें देश के विभिन्न भागों से प्रतिभागी शामिल हुए। शिविर के प्रथम दिवस पर समणी प्रो० ऋजुप्रज्ञा जी द्वारा ध्यान की दिशा के साथ शिविर का प्रारंभ करवाया गया। उक्त आठ दिनों में शिविरार्थियों द्वारा प्रेक्षाध्यान के सूत्र, विभिन्न विषयों पर विस्तारित कक्षा प्राप्त की।

समणी श्रेयसप्रज्ञा जी द्वारा शरीर विज्ञान की कक्षाओं के माध्यम से शरीर पर प्रेक्षाध्यान के प्रभावों के बारे में जानकारी प्रदान की गई। शिविर में कॉलेज के विद्यार्थी इंजीनियर मेनेजमेंट पर्सन, व्यापारी वर्ग, गृहिणीयों द्वारा सहभागिता रही। देश के विभिन्न स्थानों तथा कर्नाटक गुजरात, हरियाणा, पंजाब, महाराष्ट्र, राजस्थान, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश आदि प्रांतों से आए शिविरार्थियों को देखते हुए विविधता में एकता का अनुभव हुआ।

शिविरार्थियों ने अपने अनुभव बताते हुए कहा कि आज के भौतिकतावादी युग में बिना किसी गैजेट के रहना विशेष रूप से मोबाईल के बिना रहना यहाँ आकर सीखा और वास्तविकता में तनाव से मुक्ति प्राप्त की। अन्यों ने अपने अनुभव बताते हुए कहा कि सही प्रबंधन करना मितभाषी रहना यहाँ की मुख्य विशेषता रही।

शिविर के समापन सत्र के अवसर पर सभी शिविरार्थियों ने अपने-अपने अनुभवों को बताया। शिविर में समणी नियोजिका अमलप्रज्ञा जी, समणी ऋजुप्रज्ञा जी, समणी श्रेयसप्रज्ञाजी, समणी जगतप्रज्ञाजी द्वारा कक्षाएँ प्रदान की गई। प्रशिक्षक के रूप में विमल गुनेचा व मीना साबद्रा के द्वारा प्रशिक्षण प्रदान किया गया। शिविर की व्यवस्थाओं में आशीष गुर्जर, गिरधारी व रवि महतो की सेवाएँ प्राप्त हुई।

# संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन जैन विधि - अमूल्य निधि

## नामकरण संस्कार

**वडोदरा।**

पवन दुधेड़िया के सुपौत्र एवं विकास दुधेड़िया के सुपुत्र का नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि से संस्कारक एवं अभातेयुप सदस्य दीपक श्रीमाल ने विधिवत रूप से करवाया।

कार्यक्रम में तेयुप के अध्यक्ष पंकज बोल्या, मंत्री हितेश महनोत, निवर्तमान अध्यक्ष महावीर हिरण की उपस्थिति रही।

## विवाह संस्कार

**उधना।**

अशोक कुमार नंगावत के सुपुत्र महावीर नंगावत का विवाह संस्कार मीनादेवी चावत की सुपुत्री वैशाली चावत के साथ संस्कारक मनीष मालू एवं संस्कारक संजय बोथरा, अनिल सिंघवी, जसवंत डांगी ने मंगल मंत्रोच्चार द्वारा जैन संस्कार विधि से संपन्न करवाया।

कार्यक्रम में तुयेप, उधना के अध्यक्ष मनीष दक, मंत्री गौतम आंचलिया, एटीडीसी सह-संयोजक रोनक श्रीश्रीमाल की उपस्थिति में दोनों परिवारों को मंगलभावना पत्रक भेंट किया।

## नव प्रतिष्ठान शुभारंभ

**बारडोली।**

मुकेश कुमार, पंकज कुमार बडौला परिवार के प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि द्वारा संपादित हुआ। संस्कारक के रूप में अभातेयुप के उपाध्यक्ष जयेश मेहता उपस्थित रहे। मंगल मंत्र द्वारा कार्यक्रम संपन्न किया गया।

कार्यक्रम में तेयुप के उपाध्यक्ष संजय बड़ोला, रविन कोठारी उपस्थित रहे। स्थानीय अध्यक्ष साहिल बाफना एवं मंत्री रोनक सरणोत द्वारा कार्यसमिति सदस्य श्रेयांस बड़ोला, संयम, बड़ोला परिवार जनों को आध्यात्मिक मंगलकामनाएँ प्रेषित की।

## विवाह संस्कार

**लाडनूं।**

लाडनूं निवासी मूलचंद डागा के सुपुत्र पंकज डागा का विवाह संस्कार श्रीडूंगरगढ़ निवासी हंसराज बाफना की सुपुत्री प्रेक्षा बाफना के साथ उपासक व संस्कारक विमल गुनेचा व संस्कारक इंद्र बैंगानी ने मंगल मंत्रोच्चार के साथ संपन्न करवाया।

इस अवसर पर तेयुप, लाडनूं अध्यक्ष संजय मोदी ने परिषद की तरफ से वर-वधू पक्ष के परिवारों व उपस्थित सभी का आभार ज्ञापन किया। इस अवसर पर महासभा कार्यकारिणी सदस्य तेजकरण बोथरा, स्थानीय सभा के कार्यकारी अध्यक्ष संपतराज डागा, तेयुप, लाडनूं मंत्री रौनक घोषल, सहमंत्री विकास रुणवाल सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्यों की उपस्थिति रही।

## नामकरण संस्कार

**सूरत।**

गंगाशहर निवासी, सूरत प्रवासी रणजीत सेठिया के सुपुत्र नवीन-प्रज्ञा सेठिया के प्रांगण में कन्या का जन्म हुआ। जिसका नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि से संस्कारक प्रकाश डाकलिया, विजयकांत खटेड़, दीपक रांका ने संपूर्ण विधि व मंत्रोच्चार से संपन्न करवाया। संस्कारकों की प्रेरणा से सभी ने त्याग-प्रत्याख्यान किया।

इस अवसर पर धर्मचंद पुगलिया ने नवजात शिशु को आशीर्वाद प्रदान किया। नरेंद्र सेठिया ने समागत संस्कारकों का व उपस्थित सभी का आभार ज्ञापन किया। तेयुप, सूरत की ओर से अभातेयुप सदस्य अरविंद बैद ने शुभकामनाएँ प्रेषित करते हुए नामकरण पत्रक व मंगलभावना पत्रक भेंट किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
11 - 17 अप्रैल, 2022



✦ *गुरु ज्ञानदाता होते हैं। वे संस्कार भरते हैं, अनुशासन करते हैं। जिनसे कुछ प्राप्त हुआ, उनके नाम को छिपाएँ क्यों?*
**—आचार्यश्री महाश्रमण**

# आत्मा के आसपास

❑ **आचार्य तुलसी** ❑

**प्रेक्षा : अनुप्रेक्षा**

## आभा-मंडल

**प्रश्न :** आभा-मंडल जैसा होता है, वैसा ही रहता है या इसे बदला भी जा सकता। हैं? आभा-मंडल को उज्ज्वल बनाने का क्या उपाय है?

**उत्तर :** आभा-मंडल का सीधा संबंध है भावों की पवित्रता से। जैसे-जैसे भावों की विशुद्धि बढ़ती है, आभामंडल बदलता रहता है। जिस व्यक्ति में क्रोध, घृणा, ईष्या, द्वेष। आदि नकारात्मक भाव जितने कम होते हैं, हिंसा, तोड़-फोड़ आगजनी, लूटपाट आदि ध्वंसात्मक प्रवृत्तियों को प्रोत्साहन देने वाले भाव जितने कम होते हैं, आभा-मंडल उतना ही अच्छा होता है। जैन दर्शन की भाषा में लेश्या की विशुद्धि आभा-मंडल की विशुद्धि है और व्यवहार की भाषा में विचारधारा की विशुद्धि आभा-मंडल की उज्ज्वलता में निमित्त बनती है। विचारों में शुद्धि की अपेक्षा तरतमता रहती है। यही तरतमता आभा-मंडल में भी घटित होती है।

आभा-मंडल को उज्ज्वल बनाने में ध्यान तो प्रबल निमित्त है ही, स्वाध्याय, अनुप्रेक्षा, प्रवचन, चर्चा और चिंतन भी सक्षम उपाय हैं। संकल्प के साथ अपने चिंतन को प्रशस्त करने वाला व्यक्ति अनायास ही आभा-मंडल को उज्ज्वल बनाने में सफल। हो जाता है।

कलकत्ता से समागत एक भाई सुना रहा था कि उसको **'महाप्रज्ञ'** से एक चिंतन मिला-'मुझे अपने चित्त में अच्छे भाव रखने चाहिए।' उसने इस विचार को पकड़ लिया। वह प्रतिदिन जागरूक रहने लगा। अभ्यास पुष्ट हुआ। बुरे विचार स्वयं समाप्त हो गए। उसके परिजनों और परिचितों में एक प्रतिक्रिया है कि सब व्यक्ति ऐसे हो जाएं तो परिवार में अशांति जन्म ही नहीं ले सकती। वह बराबर सोचता रहता है कि मैं ऐसा चिंतन नहीं करूंगा, जिससे किसी का बुरा हो। मैं ऐसा कोई काम नहीं करूंगा, जिससे किसी को कष्ट हो। यह विचारों की दृढ़ता आभा-मंडल को उज्ज्वल, उज्ज्वलतर बनाने में उपयोगी बनती है।

मलिन आभा-मंडल व्यक्ति को स्वार्थी, अभिमानी, असंयमी, क्रूर और कदाग्रही बनाता है। वह अपने जीवन में ऐसा कोई भी काम नहीं करता, जिससे उसे आध्यात्मिक आरोहण में सहयोग मिले। उसकी चेतना बहिर्मुखी होती है, चिंतन एकांगी होता है, निर्णय में आग्रही मनोवृत्ति का पुट रहता है और वह किसी की आत्मीयता नहीं पा सकता।।

**प्रश्न :** किस व्यक्ति का आभा-मंडल कैसा है? यह जानने की कोई कसौटी है क्या? साधक साधना करता जाए और उसके परिणामों के संबंध में उसे कोई अवगति ही न हो तो वह उस मार्ग पर कब तक चलेगा?

**उत्तर :** व्यक्ति साधना करे और उसका कोई परिणाम न आए, यह कभी हो ही नहीं सकता। मनुष्य की अच्छी और बुरी प्रत्येक क्रिया की प्रतिक्रिया होती है। परिणाम स्थूल होते हैं तो स्पष्ट रूप से उनका अवबोध हो जाता है और परिणाम सूक्ष्म होते हैं तो उनका आभास भी नहीं हो सकता। ऐसी परिस्थिति में व्यक्ति अपनी दृष्प्रवृत्ति का परिणाम जानने के लिए उत्सुक क्यों नहीं होता? ऐसे बहुत व्यक्ति हमारे संपर्क में रहते हैं जो साधना की। प्रारंभिक अवस्था में ही उसके परिणाम देखने के लिए आतुर रहते है। किंतु वे कभी यह सोचते भी नहीं कि हमने किसी को धोखा दिया है, किसी को बुरा-भला कहा है, किसी की आजीविका का विच्छेद किया है, क्रोध किया है, षड्यंत्र किया है, और भी न जाने क्या-क्या किया है। इन सबका परिणाम क्या होगा? इन दुष्प्रवृत्तियों का फल भोगते समय हिस्सा बंटाने कौन आएगा?

यह एक निर्विवाद तथ्य है कि हर प्रवृत्ति का परिणाम निश्चित है। आभामंडल की उज्ज्वलता जब बहुत ही सूक्ष्म स्तर पर होती है, तब उसका स्पष्ट आभास न भी हो फिर भी यह बात सही है कि जिसका आभा-मंडल पवित्र होता है, उनमें सहज रूप। से बुरे संस्कार संक्रांत नहीं होते। वह व्यक्ति बुराइयों से प्रभावित नहीं होता। उस पर तांत्रिक प्रयोगों का प्रभाव नहीं पड़ता। उसे सात्त्विक आनंद का अनुभव होता रहता है। उसमें अभय भावना विकसित होती है। अभय का मुख्य स्रोत है-सम्यक दर्शन। सम्यक दृष्टि आभावलय को उज्ज्वल बनाती है और उज्ज्वल आभावलय भय की भावना को समाप्त करता है। मानसिक बल उसी व्यक्ति का बढ़ सकता है, जो अभय रहता है। इष्ट की साधना, आध्यात्मिक विकास, आत्मा के प्रति समर्पण, अंतर्मुखता, द्वंद्व-मुक्त चित्त आदि ऐसे अनेक बिंदु है, जो आभा-मंडल की उज्ज्वलता के प्रबल साक्ष्य है। इन सब परिणतियों के आधार पर कोई भी व्यक्ति अपने आभा-मंडल की पहचान कर सकता है।

## तेजोलब्धि : उपलब्धि और प्रयोग

**जागृत शक्ति निरोध की, सक्रिय पाचन-तंत्र।**
**पापभीरुता, नम्रता, अचपलता का मंत्र।।**
**वह लेश्या है तेजमय, अणुओं का समुदाय।**
**जो वैचारिक परिणति, वह भावात्मक आय।।**
**शुद्ध, शुद्धतर, शुद्धतम द्रव्यों का संयोग।**
**तेज, ओज बढ़ता विपुल, मिटते दुःसह रोग।।**
**ध्यान-साधना काल में, लेश्या का विज्ञान।**
**रंगों के आधार पर, हो पूरी पहचान।।**

**प्रश्न :** आभा-मंडल का प्रभाव केवल मन पर ही होता है या शरीर पर भी? मनोबल की प्रबलता आभा-मंडल को स्वच्छ बनाती है अथवा स्वच्छ आभा-मंडल मानसिक शक्ति का विकास करता है?

**उत्तर :** मन और शरीर का परस्पर घनिष्ठ संबंध है। शरीर में कोई बीमारी होती है तो मन अशांत हो जाता है और मन अशांत है तो शरीर क्लांत हो जाता है। इसलिए शरीर और मन पर होने वाले प्रभावों को अलग-अलग बांटा नहीं जा सकता। ये दोनों अन्योन्याश्रित हैं। आभा-मंडल की स्वच्छता से शरीर और मन दोनों साथ-साथ प्रभावित होते हैं। उससे नियंत्रण की शक्ति बढ़ती है। इस शक्ति का भी शरीर और मन दोनों के साथ संबंध है। संकल्प पूर्वक नियंत्रण किया जाता है, पर वह स्थायी नहीं होता। आभा-मंडल या तेजोलेश्या के स्पंदनों से जो नियंत्रण होता है, वह स्वाभाविक होता है।

शरीर पर तैजस-शक्ति का प्रभाव होता है-पाचन-तंत्र की सक्रियता। पाचन-तंत्र ठीक ढंग से काम करता है तो भोजन का रस ठीक बनता है। सही ढंग से रस रूप में परिणत भोजन शरीर को पोषण देता है। शरीर पुष्ट होता है तो मन की दृढ़ता में भी मा मिलता है।

तेजोलेश्या की विशुद्धि से बुरे आचरणों और भावों से बचने की प्रवनि पापभीरुता विकसित होती है। उच्छृंखलता समाप्त हो जाती है। विनम्रता बढ़ती है। संकल्प-शक्ति का विकास होता है। फलतः स्थिरता और एकाग्रता बढ़ती है। चित्त की अस्थिरता से होने वाले द्वंद्व समाप्त हो जाते हैं और भीड़ में भी अकेलेपन के आनंद का अनुभव होने लगता है। यह सब तैजस-शरीर के जागरण अथवा उजले आभावलय से ही घटित हो सकता है। **(क्रमशः)**

# साँसों का इकतारा

❑ **साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा** ❑

**(७२)**

तुम्हारा नाम ले पंगु हिमालय-शिखर पर चढ़ता।
शिथिल संकल्प में आती तुम्हारे नाम से दृढ़ता।।

देव! तुम प्राण हो मेरे स्वयं में शून्य हूँ मैं तो
बने जब नाथ तुम मेरे स्वयं ही धन्य हूँ मैं तो
अबोली प्रेरणा पाकर विपुल उत्साह है बढ़ता।।

प्रभो! तुम दीप ज्योतिर्मय निपट मैं एक बाती हूँ
नहीं वैशिष्ट्य कुछ मुझमें तुम्हीं से ज्योति पाती हूँ
तुम्हारी हर कहानी को मनुज क्या देव भी पढ़ता।।

लहर मैं एक पानी की विशद तुम आर्य! जलनिधि हो
नहीं कुछ जानती मैं तो तुम्हीं आकर स्वयं सुधि लो
तुम्हारी दृष्टि का जादू नए इतिवृत्त भी गढ़ता।।

**(७३)**

देव! बतला दो रहा है दूर कितना साध्य मेरा।
प्रश्न उठता है सहज ही हो सकेगा कब सवेरा।।

चल रही हूँ देवते! मैं साधना पथ पर निरंतर
है अभी अज्ञात मंजिल मार्ग का अवशेष अंतर
सतत गति से श्रांत होकर भी नहीं क्षण भर रूकूँगी
प्राप्त करके ही रहूँगी मैं यहाँ शाश्वत बसेरा।।

गहन कुंजों में वनों में झुरमुटों में घूमती हूँ
पूर्ण करने खोज अपनी कल्पना में झूमती हूँ
दे सकी कितना बताओ स्वप्न को आकार अब तक
राह की सब आपदाएँ हो सकेंगी पार कब तक
देख तो दर पर तुम्हारे मैं खड़ी हूँ डाल डेरा।।

**(७४)**

कर सकती जितना अवगाहन नभ का पांखे
वे विशाल उससे उसको कैसे मानेंगी?

तुमने काली रातों में आलोक बिछाया
इस कारण हर पथिक तुम्हारा आभारी है
जीवन और मरण की सच्ची परिभाषा दी
सच मानो इन उपकारों से जग भारी है
इंद्रधनुष से विविध रूप हैं देव! तुम्हारे
तब बोलो ये आँखें कैसे पहचानेंगी।।

जहर निगलकर तुमने सुधा पिलाई सबको
क्यों ना मानव तुम्हें देवता कहकर गाए।
रेगिस्तानी उपवन को सरसब्ज बनाया
कैसे उसमें ये सतरंगे फूल खिलाए
जीवन के सब राज खोल रख दिए सामने
पर उनको कुंठित प्रतिभा कैसे जानेगी।।

सपनों की दुनिया में कब से खोज रही हूँ
पा जाएँ तुमको प्यासे ये नयन हमारे
चाँद-सितारों से चमकीला नीला अंबर
देख न पाए कहीं तुम्हारे दिव्य नजारे
अब बोलो इस आस्था को कैसे समझाएँ
तुमको पाने दुनिया का कण-कण छानेगी।।

**(क्रमशः)**

जय भिक्षु जय तुलसी जय महाप्रज्ञ जय महाश्रमण

# * भावभीनी श्रद्धांजलि *

NKCM
SPINNERS PRIVATE LIMITED

Major producers of 100% Viscose and Viscose blended yarn, Cotton and Cotton-blend yarns, Micro-Modal and other fancy yarns.

Narendra Kumar Nakhat
info@nkcmgroup.com
+91 70001 93286
www.nkcmgroup.com
43, Alagiri singh street, Erode 638001 (Tamil Nadu)

✦ देव, गुरु और धर्म के प्रति सबके मन में घनीभूत आस्था होनी चाहिए। इससे अध्यात्म के पथ पर आगे बढ़ने का पथ प्रशस्त होगा।
—आचार्यश्री महाश्रमण

जय भिक्षु जय तुलसी जय महाप्रज्ञ जय महाश्रमण

### युवाशक्ति को शासनमाता की प्रेरणा

संस्था में सिद्धांतों एवं नीतियों के अनुसार कार्य हो। संस्था को नेतृत्व देने वाले अहंकार एवं ममंकार की भावना न रखें। संस्था के सदस्यों में भी सामंजस्य की कला हो। नेतृत्व कोई करे, सभी सदस्य उसके साथ हों।

## * भावपूर्ण श्रद्धांजलि *

# तेरापंथ युवक परिषद्

## वापी पर्वत पाटिया भुज

जय भिक्षु जय तुलसी जय महाप्रज्ञ जय महाश्रमण

### युवाशक्ति को शासनमाता की प्रेरणा

युवक शक्ति का प्रतीक है। उसके कण-कण में शक्ति के स्रोत बह रहे हैं। मात्र अपेक्षा है उसके सम्यक् नियोजन की। सम्यक् आयोजन के अभाव में निर्माण की शक्ति ध्वंस के रूप में परिणत हो जाती है।

## * भावभीनी श्रद्धांजलि *

# तेरापंथ युवक परिषद्

## उधना अहमदाबाद बारडोली

जय भिक्षु    जय तुलसी    जय महाप्रज्ञ    जय महाश्रमण

शासनमाता उवाच

टकराहट से बचो, रचो शान्त सहवास।
समाधिस्थल बनकर रहो, फैले सुयश-सुवास।।

**✻ भावपूर्ण श्रद्धांजलि ✻**

**मदनलाल, कैलाशचंद, रमेश रोशन, प्रवीण, गौतम, अन्नराज, रिषभ, प्रख्यात, चिरायु बोरणा**

**बरार–बेंगलोर**

**MJR**

**Mahaveer Jewellers**

**M.J.R. House, C.T. Street, No. 107, Bangalore-560002 (Karanataka)**

जय भिक्षु    जय तुलसी    जय महाप्रज्ञ    जय महाश्रमण

*एक उजली छवि*

*जन-जन की आंखों में बसी अलौकिक छवि*
*जिसे देखकर मन कभी भरता नहीं था*
*अचानक यों तिरोहित हो गई*
*जैसे एक विराट चेतना शून्य में खो गई।*

शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी

*कोलकाता प्रवासी समस्त लाडनूंवासियों की ओर से भावपूर्ण श्रद्धांजलि*

# लाडनूं नागरिक परिषद्, कोलकाता

| राधेश्याम झंवर | शार्दुलसिंह जैन | संतोष गंगवाल |
|---|---|---|
| अध्यक्ष | मुख्य न्यासी | मंत्री |

✦ *अर्थार्जन में नैतिकता व प्रामाणिकता रहे। उपयोग में संयम व अनुकंपा का भाव हो।*

**—आचार्यश्री महाश्रमण**

जय भिक्षु जय तुलसी जय महाप्रज्ञ जय महाश्रमण

सादर श्रद्धाप्रणति

**श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, सूरत**

**तेरापंथ युवक परिषद, सूरत**

**तेरापंथ महिला मंडल, सूरत**

**अणुव्रत समिति ग्रेटर, सूरत**

# संबोधि

❑ आचार्य महाप्रज्ञ ❑

## बंध-मोक्षवाद

**मेघः प्राह**

**(३१) प्रायश्चित्तञ्च वाञ्छामि, पूर्वमालिन्यशुद्धये।**
**चेतः समाधये भूयः, कामये धर्मदेशनाम्।।**

*पहले जो मेरे मन में कलुष भाव आया, उसकी शुद्धि के लिए मैं प्रायश्चित्त करना चाहता हूँ और चित्त की समाधि के लिए आपसे पुनः धर्म-देशना सुनना चाहता हूँ।*

**उपसंहार**

मेघकुमार का मन श्रामण्य के पहले ही दिन कुछेक तात्कालिक कारणों से अस्थिर हो गया। वह घर जाने के लिए तत्पर होकर भगवान् महावीर के पास आया और अपनी सारी भावना उनके सामने रखी। भगवान् महावीर ने उसके मानस को पढ़ा, उतार-चढ़ाव पर ध्यान दिया और उसे श्रामण्य में पुनः प्रतिष्ठापित करने के लिए प्रतिबोध दिया।

भगवान् की वाणी सुन मेघकुमार का आत्म-चैतन्य जगमगा उठा। उसने दुःख, दुःख-हेतु, मोक्ष और मोक्ष-हेतु—इन चारों को सम्यक् जान लिया और पुनः श्रामण्य में स्थिर हो गया।

अब उसकी आत्मा इतनी जागृत हो चुकी थी कि उसने अपने पूर्वकृत मनोमालिन्य की शुद्धि के लिए भगवान् से प्रायश्चित्त की याचना की। वह जान गया कि प्रायश्चित्त की आग में जले बिना सोना कंचन नहीं होता। उसने प्रायश्चित्त लिया और वह भगवान् के शासन में पुनः सम्मिलित हो गया।

**इति आचार्यमहाप्रज्ञविरचिते संबोधिप्रकरणे**
**बंदमोक्षवादनामा अष्टमोऽध्यायः।**

## मिथ्या-सम्यग्-ज्ञान-मीमांसा

**मेघः प्राह**

**(१) ज्ञानं प्रकाशकं तत्र, मिथ्यासम्यक्त्वकल्पना।**
**क्रियते कोऽत्र हेतुः स्याद्, बोद्धुमिच्छामि संप्रति।।**

*मेघ बोला—ज्ञान प्रकाश करने वाला है। फिर मिथ्याज्ञान और सम्यग्ज्ञान ऐसा जो विकल्प किया जाता है, उसका क्या कारण है? अब मैं यह जानना चाहता हूँ।*

डेल्फी के मोनूर में देववाणी हुई कि सुकरात महान् ज्ञानी है। एथेंस वासी इससे बहुत प्रसन्न हुए। वे सुकरात के पास आए। उन्होंने देववाणी के संबंध में बताया। सुकरात ने कहा—'नहीं, मैं अज्ञानी हूँ। मैं जब नहीं जानता था तब मैं अपने को ज्ञानी समझता था और जब से जानने लगा हूँ तब से अपने को अज्ञानी समझता हूँ।'

एक यह अज्ञान है और एक अज्ञान ज्ञान के पूर्व का होता है। दोनों में बड़ा अंतर है ज्ञान के पूर्व का अज्ञान ज्ञान का आवरण है, ज्ञान का अभाव है और ज्ञान के अनंतर का अज्ञान आवरण या अभाव नहीं है। किंतु नहीं जानना है। जो देखा है, अनुभव किया है, जाना है वह इतना महान् है कि उसके संबंध में कहना कठिन है।

जिस पर अज्ञान का आवरण अधिक होता है उसे विवेक नहीं होता। अंधकार से प्रकाश की ओर बढ़ना उसके लिए अशक्य होता है। वह तमोमय जीवन जीता है। वह नारकीय जीवन है। इसलिए संतजनों ने मानव को आलोक की ओर आकृष्ट करने का प्रयास किया। उन्होंने कहा—'जो उस परम सत्य को जान लेता है उसके हृदय की ग्रंथि भिन्न हो जाती है, संशय छिन्न हो जाते हैं और समस्त कर्म क्षीण हो जाते हैं।' **'नाणं पयासकरं'**—ज्ञान प्रकाशक है, बहुत सारवान् सूत्र है। सम्यग्ज्ञान के आलोक में जन्म-जन्मांतरों का संचित तम एक क्षण में नष्ट हो जाता है। **(क्रमशः)**

# अवबोध

❑ मंत्री मुनि सुमेरमल 'लाडनूं' ❑

## धर्म बोध

**दान धर्म**

**प्रश्न १४ :** क्या दान देने का अधिकारी गृहस्थ ही है?

**उत्तर :** गृहस्थ के पास विविध प्रकार की वस्तुएँ होती हैं, इसलिए दान देने का मूल अधिकारी गृहस्थ ही है। साधु अपनी भिक्षा में समागत वस्तु को दूसरे साधर्मिक मुनियों को सभक्ति देता है, उसे आगमों में 'वैयावृत्त्य' कहा है। इसमें मात्र शब्द भेद है, निर्जरा में कोई फर्क नहीं है।

**प्रश्न १५ :** क्या दान मात्र पुण्य का हेतु है?

**उत्तर :** जो दान संयमी की जीवन-यात्रा में सहायक होता है, उसमें धर्म है, पुण्य है। जो दान असंयमी व संयमासंयमी की जीवन-यात्रा में सहायक होता है, वह धर्म व पुण्य का हेतु नहीं हो सकता। **(क्रमशः)**

# उपासना

(भाग - एक)

❑ आचार्य महाश्रमण ❑

## आचार्य हरिभद्र

मुनि आचार संहिता से संबंधित नाना प्रकार की शिक्षाएँ उन्हें गुरु से प्राप्त हुईं। अपने गण के परिचय-प्रसंग में गुरु ने हरिभद्र मुनि को बताया—'आगम प्रवीणा साध्वी समूह में मुकुटमणि श्री को प्राप्त महत्तरा उपाधि से अलंकृत साध्वी याकिनी मेरी गुरुभगिनी है।'

हरिभद्र ने भी याकिनी महत्तरा के प्रति कृतज्ञ भाव प्रकट करते हुए कहा—मैं शास्त्रविशारद होकर भी मूर्ख था। सुकृत के संयोग से निजकुल देवता की तरह धर्ममाता याकिनी के द्वारा मैं बोध को प्राप्त हुआ हूँ।

आचार्य हरिभद्र वैदिक दर्शन के पारगामी विद्वान् पहले से ही थे। जैन श्रमण-दीक्षा लेने के बाद वे जैन दर्शन के विशिष्ट विज्ञाता बने। उनकी सर्वतोमुखी योग्यता के आधार पर गुरु ने आचार्य पद पर नियुक्त किया।

आचार्य हरिभद्र के पास हंस और परमहंस दीक्षित हुए। वे दोनों आचार्य हरिभद्र के भगिनीपुत्र थे। हरिभद्र ने उन्हें प्रमाणशास्त्र का विशेष रूप से प्रशिक्षण दिया। दोनों शिष्यों ने एक बार बौद्ध प्रमाणशास्त्र के अध्ययनार्थ इच्छा प्रकट की। उन्होंने कहा—'यह अध्ययन बौद्ध विद्यापीठ में जाकर ही किया जा सकता है।'

आचार्य हरिभद्र ज्योतिषशास्त्र के विद्वान् थे। उनके निर्मल ज्ञान में अनिष्ट घटना का आभास हुआ। उन्होंने इस कार्य के लिए उन्हें रोका, पर व न रुके। गुरु के आदेश की अवहेलना कर दोनों वहाँ से प्रस्थित हुए। वेश बदलकर बौद्धपीठ में प्रविष्ट हुए। विद्यार्थी-दल में युग्म सहोदर प्रतिभा-संपन्न छात्र थे। बौद्ध अध्यापकों के पास वे बौद्ध प्रमाणशास्त्र पढ़ते व अपने स्थान पर आकार जैन दर्शन से बौद्ध दर्शन के सूत्र की तुलना करते हुए स्वपक्ष-विपक्ष के समर्थन और निरसन में तर्क-वितर्क पत्र पर लिखते थे। इस रहस्य का उद्घाटन देवीशक्ति द्वारा हुआ। बौद्ध अधिष्ठात्री 'तारादेवी' ने वायु-वेग से पत्र को उड़ाकर उसे लेखशाला में उाल दिया। पत्र के शीर्ष स्थान पर 'नमो जिनाय' लिखा था। बौद्ध छात्रों ने उसे देखा और उसे उपाध्याय के पास ले गए। उपाध्याय ने समझ लिया—यहाँ छद्मवेश में अवश्य कोई जैन छात्र पढ़ रहा है। परीक्षा के लिए वाटिका के द्वार पर जिन प्रतिमा की स्थापना कर सबको गुरुजनों ने जिन-प्रतिमा पर चरण रखकर आगे बढ़ने का आदेश दिया। बौद्ध जानते थे, कोई भी जैन जिन-प्रतिमा पर पैर नहीं रखेगा। आदेश प्राप्त होते ही विद्यार्थी प्रतिमा पर चरण-निक्षेप करते हुए चले गए। हंस और परमहंस के सामने धर्मसंकट उपस्थित हो गया। उन्होंने समझ लिया कि यह सारा योजनाबद्ध उपक्रम हमारी परीक्ष के लिए ही किया गया है। आचार्य हरिभद्र द्वारा बार-बार निषेध किए जाने पर भी वे आग्रह-पूर्वक यहाँ पढ़ने आए थे। गुरुजनों के आदेश-निर्देश की अवहेलना का परिणाम अहितकर होता है, यह उन्हें सम्यक् प्रकार से अवगत हो गया। दोनों ने एकांत में विचार-विमर्श किया। ज्येष्ठ बंधु ने खटिका से प्रतिमा पर ब्रह्मसूत्र की रेखा खींचकर जिन प्रतिमा की प्रतिकृति को पूर्णतः परिवर्तित कर दिया और उस पर चरण रखकर आगे बढ़ा। परमहंस ने हंस का अनुगमन किया। यह काम हंस ने अत्यंत त्वरा और कुशलता से किया। वे युगल बंधु अपने पुस्तक-पत्रों को लेकर वहाँ से पलायन करने में सफल हो गए। संयोग की बात थी कि हंस का मार्ग में ही प्राणांत हो गया। दूसरा हरिभद्र के चरणों में आकर गिरा। पुस्तक-पत्र उनके हाथों में सौंपकर उसने अंतःतोष की अनुभूति की। गहरी थकान के बाद शिष्य का जीवन पूर्ण विश्राम की कामना कर रहा था। आचार्य हरिभद्र के देखते-देखते परमहंस का जीवन-दीप बुझ गया।

कथावली-प्रसंग के अनुसार आचार्य हरिभद्र के शिष्य जिनभद्र और वीरभद्र थे। चित्रकूट में आचार्य हरिभद्र के असाधारण प्रभाव से कुछ व्यक्तियों में ईर्ष्या का भाव पैदा हुआ और उन्होंने उनके दोनों शिष्यों को गुप्त स्थान पर मार डाला। यह प्रसंग आचार्य हरिभद्र के हृदय में सुतीक्ष्य शस्त्र की तरह घाव कर गया। उन्होंने अनशन की सोची। उनकी निर्मल प्रतिभा से जैनशासन की प्रभावना की महान् संभावना थी अतः सबने मिलकर उन्हें इस कार्य से रोका। आचार्य हरिभद्र ने संघ की बात को सम्मान प्रदान कर अपने चिंतन को मोड़ा। शिष्य-संतति के स्थान पर वे ज्ञान-संतति के विकास में लगे। उनकी वृत्तियों का शोध हुआ, पर शिष्यों की वेदना उनके हृदय में कम न हुई, अतः प्रत्येक ग्रंथ के साथ उन्होंने विरह शब्द को जोड़ा है। आज भी आचार्य हरिभद्र कृत ग्रंथों की पहचान, अंत में प्रयुक्त यह 'विरह' शब्द है।

आज आचार्य हरिभद्रसूरि का संपूर्ण साहित्य उपलब्ध नहीं है पर जो कुछ भाग्य से प्राप्त है वह उच्च कोटि का है। उसमें आचार्य हरिभद्र की अमेय मेधा के दर्शन होते हैं। शोध लेखकों के लिए उनके ग्रंथ पर्याप्त सामग्री प्रदान करने वाले हैं।

अध्यात्म साधना में लीन हरिभद्राचार्य ने जीवन के संध्याकाल में अनशन की स्थिति को उल्लास से स्वीकार किया। भावों की उच्च श्रेणी में त्रयोदश दिवस का अनशन संपन्न कर वे परम समाधि के साथ स्वर्गवास को प्राप्त हुए।

विद्वान् आचार्य जिनविजयजी ने हरिभद्र का समय वी०नि० १२२९ से १२९७ (वि०सं० ७५७ से ८२७) तक निर्णीत किया है। **(क्रमशः)**

✦ *व्यक्ति स्वार्थी न बने। वह स्वार्थ से उपरत होकर सर्वार्थ चिंतन करे, दूसरों के हित का चिंतन करे।*
**—आचार्यश्री महाश्रमण**

# शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के प्रति आध्यात्मिक उद्‌गार

## शासनमाता कनकप्रभा जी के प्रति

● **साध्वी त्रिशला कुमारी** ●

जय-जय शासनमाता! अंतर से स्वर निकले।
वीतरागता के पथ पर ये कदम चले।
आत्मा से जोड़ा तार, सिद्धि के द्वार खुले।।आं।।

गुरु तुलसी की कृपा, बने कला से कनकप्रभा।
साध्वी प्रमुखापद पा, फैलाई गण आभा।
महाश्रमणी अलंकरण हो---शासन के भाग्य खिले।।१।।

असाधारण प्रमुखा, अनुपम कार्यशैली।
भर दिया है गण भंडार, अद्‌भुत चिंतनशैली।
साहित्य सृजन करके हो---रच दिए स्वस्तिक उजले।।२।।

गुरु भक्ति रूं रूं में, इंगित पर अर्पित प्राण।
श्रम सेवा और समर्पण, गणहित तन मन कुर्बान।
गुरु महाश्रमण कृपा---हो दिल के अरमान फले।।३।।

युगप्रधान गुरुवर ने, संथारा पचक्खाया।
जन्मों के पुण्य फले, दुर्लभ अवसर आया।
सौभागी शासन माँ हो--- गुरुवर की शरण मिले।।४।।

**लय : कंटालिय वाले की---**

---

## मुझे सब है पता

● **साध्वी कमनीयप्रभा** ●

राज है, हर दिल में तेरा
अमर बन गई तुम माँ
हर जुबाँ, हर बोल में हो,
नयनों की तस्वीर हो तुम माँ
हम करते नमन, तुमको माँ।

एक सुर, एक तान उठे
हर मन की जरूरत हो तुम माँ
विश्वास भी आश्वास तुम्हीं
जीवन की प्यास हो तुम माँ।

जब भी कभी, मन प्रांगण में
तुम उतरती हो माँ
नव चेतना, नव प्रेरणा,
नव पुलकन भरती हो माँ।

सपना हम, साकार करें,
श्रेष्ठ साध्वी बन दिखलाएँ
संस्कारों, का वर दो हमें
तेरी राह चल पाएँ माँ।

सींचा है, वत्सलता भरे
ममता भर कर से तुने माँ
शक्ति दो, कलियाँ ये तेरी
आगे बढ़ती ही जाए माँ
हम करते नमन, तुमको माँ।

## जय बोलो शासनमाता की---

● **साध्वी गुप्तिप्रभा** ●

जय बोलो शासनमाता की।
जगदम्बे श्रमणी गण त्राता की।। जय---।।

चंदेरी चाँदनी की अनुपम।
शमदम खमकी मूरत अनुपम।
शासन माँ वात्सल्य प्रदाता की।।१।।

वैराग्यामृत से सराबोर।
समता से भीगा पोर पोर।
नव उन्मेषों के संधाता की।।२।।

विनय समर्पण था अद्‌भुत।
सृजनशीलता में अग्रदूत।
आचार्यत्रय को शुभ साता दी।।३।।

राजधानी की कमनीय कला।
राजधानी में ही स्वप्न कला।
श्रद्धार्पित है पवित्रात्माजी।।४।।

**लय : जय बोलो महावीर स्वामी की----**

---

## श्रम की क्या हम गाथा गाएँ

● **साध्वी चेतनप्रभा** ●

साम्य योग में सम्मुख रखे महाश्रमणी को
श्रम सेवा स्वाध्याय प्रेरणा मिले सभी को
व्यवहार बोध में किया उजागर तुमको
गुरु तुलसी का वरदान मिला है हमको।

श्रम की क्या हम गाथा गाएँ
श्रम था जीवन का सहचर
महाश्रमणी तुम महाश्रमिक थी
कह रहे धरती अम्बर।।

कुशल नेतृत्व मिला तुम्हारा
चारों तीर्थ की सेवा करती
स्वयं का तन-मन विसरा कर
जन-जन की पीड़ा तुम हरती।।

ब्रह्म बेला की मधुर तान
रजनी की थी मौन आवाज
बहती ज्ञान की निर्मल धार
स्वाध्याय निष्ठा है इसका राज।।

श्रम सेवा स्वाध्याय की मैं
कर आराधन मंजिल पाऊँ
तेरे पद्‌चिह्नों पर चलकर
मैं भी गुरु दिलवासी बन जाऊँ
शीघ्र भव सागर तर जाऊँ।।

## आत्मप्रज्ञा की धनी शासनमाता के महाप्रयाण पर

● **साध्वी डॉ० अक्षयप्रभा** ●

तेरापंथ शासन की एक विरल विभूति है कनकप्रभा।
प्रभा में निहित है संयम सेवा सृजनशीलता की आभा।।

उच्च संस्कार महान जीवनमूल्यों से युक्त व्यक्तित्व है आपका।
आपके जीवन में अद्‌भुत समन्वय है त्याग तेजस्विता तितिक्षा का।।

पवित्रता अप्रमत्तता विनम्रता से संघ में पाया ऊँचा स्थान।
सत्य-चरित्र-सिद्धांत निष्ठा से गण में मिला सर्वोच्च सम्मान।।

अनुशासन व प्रबंधन पटुता से भिक्षु उपवन में खोले नए आयाम।
ओजस्वी संपादन कला से साहित्य जगत में नाम हुआ सुनाम।।

आपकी कर्तृत्व नेतृत्व शक्ति से निखरा साध्वी समाज का ओज।
तेरी संन्यास रश्मि से प्रगटा सघन तिमिर में महा तेज।।

श्रमशीलता ग्रहणशीलता कार्यशीलता की तुम हो नव्य मिशाल।
श्रद्धा समर्पण स्वाध्यायशीलता से चमका है तव भव्य भाल।।

महाभाग्यशाली महाश्रमणीजी गुरुमुख से पाया शासनमाता का स्थान।
असाधारण तेरी काव्यकला को काव्य जगत में मिला वर्मादेवी सा मान।।

असाध्य रूप में भी आत्मा शरीर भिन्नता का मंत्र अपनाया।
'न मे चिरं दुक्खमिणं भविस्सई' शास्त्रवाणी का लेकर साया।।

१७ मार्च, २०२२ ने अनहोनी कर नम कर दी सबकी आँखें।
जिनशासन की पंडित मरणकला शाश्वत सुख है भाखे।।

---

## अर्हम

● **साध्वी यशस्वीप्रभा** ●

विरह व्यथा में आज व्यथित है धरा पर, कुदरत का हर पोर।
स्वयं में पुनः समाहित कर ली, क्यूँ जीवन की सतरंगी भोर।।

जीवन की हर सुबह गुलाबी, गण उपवन महकाती।
सांझ सुरंगी बनकर तुम, नभ में निरूपम चांद उगाती।
सांस सांस में गुरु खातिर विनय समर्पण का अर्घ्य चढ़ाती।
जीवन की देहरी पर बिन बाती, ममता का दीप जलाती।
ज्योतिर्मय चिन्मय ने क्यूँ आज खींच ली सांसों की डोर।।

वेदना से व्यथित होना तुमको कभी नहीं भाया।
गुरु दृष्टि में ही तुम्हारा संपूर्ण विश्व था समाया।
भगवान की दर भक्त पहुँचे यह प्रश्न नहीं अकुलाया।
भक्त के घर भगवान पहुँचे यह कैसा दृश्य दिखलाया।
शांत हो गई क्यूँ आज जीवन की रसमय हिलोर?

अखंड आनंद की हो आराधना ऐसी जगाई तुमने प्यास।
क्यूँ एक क्षण में ही टूट गया, स्वानुभूति का वो एहसास।
कहाँ मिलेगा अपनापन तुझ सा, कहाँ मिलेगा वो आश्वास।
क्यूँ भीतर में समाहित किया मम जीवन का उल्लास।
देना आशीर्वर मुझको ममत्व से समत्व की पाऊँ मैं ठौर।।

# शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के प्रति आध्यात्मिक उद्गार

## एक दृढ़-तपस्विनी और गहन साधिका थी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी

● **नरपत दुगड़ (संसारपक्षीय भांजा)** ●

संसार में आने वाला हर प्राणी जीवन जीता है पर कुछ जीवन अनुकरणीय और पूजनीय होते हैं। ऐसा ही एक ओजस्वी व्यक्तित्व था शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी का। संघ और संघपति के प्रति अटूट आस्था का एक अद्भुत उदाहरण थी साध्वीप्रमुखाश्री। एक दृढ़-तपस्विनी और गहन साधिका होने के साथ-साथ ही वे परम विदूषी, संवेदनशील कवयित्री और एक कुशल व्यवस्थापक थी। इतनी सारी विशेषताओं का समवाय अगर किसी व्यक्तित्व में होता है तब निश्चित रूप से वह व्यक्तित्व आलौकिक है। तेरापंथ धर्मसंघ के तीन महान आचार्यों के पावन निर्देशन में गुरुओं के इंगित की प्रतिपल आराधना करते हुए गुरु निष्ठा और अटूट आस्था से उन्होंने आचार्यों की कृपा प्राप्त की उनके निर्देशन में अपनी कुशल नेतृत्व शैली और दायित्वशीलता से धर्मसंघ को अपूर्व ऊँचाइयाँ प्रदान की। पूरे चतुर्विध संघ ने मातृहृदया साध्वीप्रमुखाजी का मातृतुल्य आध्यात्मिक वात्सल्य, करुणा और कृपादृष्टि प्राप्त कर धन्यता की अनुभूति की। उनकी वैचारिक उदात्तता, ज्ञान की अगाधता, आत्मा की पवित्रता, सृजनधर्मिता, विनम्रता ने हमेशा उन्हें एक विशिष्ट स्थान में स्थापित किया। ऐसी दीपशिखा के संसारपक्षीय परिजन होना हमारे परम सौभाग्य का प्रतीक है। यह तो मेरा सौभाग्य है कि वह मेरी संसारपक्षीय मासी थी, जिनकी छत्रछाया में मेरा लालन-पालन हुआ। यदि मैं उन्हें यशोदा माँ कहूँ तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। वह सचमुच एक असाधारण पुष्प आत्मा थी।

उनके चरणों में अगाध ममता का सागर था। वह हमेशा मेरे स्मृति पटल पर विराजमान रहेगी। आपकी परम इच्छा थी कि गुरुदेवश्री महाश्रमण जी को 'युगप्रधान' की उपाधि से विभूषित होते हुए देखें। नियति का लेखा कोई बदल नहीं सकता। इस समारोह की साक्षी बनने से पूर्व ही उनका महाप्रयाण हो गया और पूरा धर्मसंघ उस समारोह में प्रमुखाश्रीजी की दिव्य उपस्थिति से वंचित रह जाएगा, पर उनके द्वारा प्रसारित अध्यात्म रश्मियों से पूरा परिवार व धर्मसंघ आलोकित होता रहेगा। उनकी असाधारण सेवाओं को इतिहास हमेशा याद रखेगा और उनका नाम सदा स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेगा। आपके प्रेरणादायी और अमृतमय वचन हमेशा हमारा मार्गदर्शन करते रहेंगे।

उनकी मोक्षगामी आत्मा आध्यात्मिक शिखर पर पहुँचे, यह मंगलकामना है।

---

## असाधारण में साधारण और साधारण में असाधारण थी साध्वीप्रमुखाश्री

● **सृष्टि दुगड़** ●

परम श्रद्धेय युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के श्रीचरणों में वंदन। विराजित सभी चारित्रात्माओं को नमन। आज साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी की स्मृति सभा में मैं क्या कहूँ? मेरे पास शब्द ही नहीं, शासनमाता साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी को तीन-तीन आचार्यों का आशीर्वाद प्राप्त हुआ। आचार्य तुलसी ने उन्हें संघमहानिदेशिका, महाश्रमणी जैसे पद से संबोधित किया। आचार्य महाश्रमणजी ने उन्हें असाधारण बना दिया और लाडनूं में शासनमाता का स्थान प्रदान किया। वे संघ की शासनमाता बनी, परंतु मेरी तो दादीसा महाराज ही थीं। वह असाधारण में साधारण थी और साधारण में असाधारण। इतने सारे अलंकरण, संबोधन और इतना ऊँचा पद व सम्मान पाने के बाद भी जब वह हमसे बात करती थीं तो हमें पता ही नहीं चलता था कि वह इतनी बड़ी महान व्यक्तित्व हैं। हमेशा हमसे छोटी-छोटी बातें पूछती थीं और हमें प्रेरणा भी देती थीं, उनका व्यक्तित्व इतना विशाल था। हालाँकि पढ़ाई के कारण मैं उनके दर्शन बहुत कम कर पाती थी फिर भी जब भी मुझसे मिलती तो मेरी पढ़ाई से लेकर हर चीज के लिए पूछती, उनके अंतिम समय में जब हम लोग दर्शन कर रहे थे, तब उन्होंने मुझे बचपन के नाम से ही पुकारा। वह इतनी सजग थीं कि उन्हें हमारी सारी बातें याद थी।

दादी सा महाराज सचमुच एक सूरज ही थी जिनका प्रकाश और ममता हर किसी के लिए बिना भेदभाव के था। उनका वह मुस्कराता चेहरा हमेशा मेरी नजरों के सामने रहेगा और मुझे शक्ति एवं प्रेरणा देता रहेगा।

विघ्नहर्ता, फल दाता,
शासनमाता थारो नाम!

---

## मेरी यशोदा माँ थी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी

● **शशि बोहरा (संसारपक्षीय भानजी, पटना)** ●

मृत्यु सत्य है और शरीर नश्वर है, यह जानते हुए भी अपनों के जाने का दुःख होता है। फिर आप तो मेरी यशोदा माँ थी, मासी तो होती ही है माँ जैसी। जन्म माँ ने दिया पर मुझे आपकी गोद मिली, मैं सौभाग्यशाली रही कि मैंने अपना बचपन आपकी गोद में बिताया। इन सालों में मुझे आपके सान्निध्य में रहने का काफी समय मिला, आपका मेरे पर जो वात्सल्य था उसको मैं कभी भूल नहीं पाऊँगी। आपको कोई भी खाली बैठा हुआ अच्छा नहीं लगता था, मैं जब भी आपके उपासना में आती आप मुझे कुछ-न-कुछ सीखने की प्रेरणा देते और फरमाते—जाने से पहले सुनाकर जाना। इसके कारण मैंने काफी कुछ कंठस्थ किया। आपकी उपासना में सामायिक तो ८, ९ हो जाती थी। आज आप प्रत्यक्ष रूप में हमारे साथ नहीं हैं पर आपकी मूरत हमेशा मेरे हृदय पटल पर अंकित रहेगी। इन आठ-दस सालों में हर चौमासे में मैं दो-ढाई महीने आपकी उपासना में रहती थी, वो समय मेरे जीवन का अमूल्य समय होता था। मैंने स्वर्ग तो नहीं देखा पर सुना है कि वहाँ बहुत सुख होता है पर मुझे तो आपके चरणों में जो आनंद एवं सुख की अनुभूति होती वो स्वर्ग के सुख से कम नहीं लगती थी। आपके दर्शन मेरी आँखों के लिए अमृत तुल्य अंजन का काम करता था। आपके व्यक्तित्व का या गुणों का वर्णन कर सकने का सामर्थ्य मुझमें नहीं है।

मैं भगवान से प्रार्थना करती हूँ कि आपकी आत्मा को शांति एवं मोक्ष प्रदान करें।

---

## शासनमाता असाधारण साध्वीप्रमुखा

● **कल्पना बैद** ●

श्रद्धा जिनकी अंजलि में थी
धर्म जिनके स्वभाव में था
समर्पण जिनका पर्याय था
वो युग थी स्वयम् में
कनकप्रभा उनका नाम था।

स्वर्ण ने कभी आभा न छोड़ी
धर्मसंघ की कीर्ति जोड़ी
मौनमूक पथिक के पग ने
मर्यादा की कभी राह न छोड़ी।

शब्दों में वो प्रभाव कहाँ
जो उनके प्रताप को नाप सके
वो एक क्षितिज से नभ सागर में
हे प्रभो! उस शक्ति का अब ध्यान लगे।
सन्निधि में समाधान था उनके
आभा में चेतन्य प्रकाश
शंका तिमिर मिटते पल में
ओजस्विता का ऐसा प्रभाव।

चिंतन, लेखन से सृजन तक
आत्मविश्वास से प्रेरणा तक
ज्ञानमय तपो गंगा का दर्शन
निश्छल, निर्मल बहे कल-कल।

शिक्षा संस्कार की पीढ़ियाँ
उनसे चढ़ी युग की सीढ़ियाँ
नेतृत्व में समसामयिकता थी
सच में वो असाधारण साध्वीप्रमुखा थीं।

---

## महासूर्य इक अस्त हुआ

● **कुसुम कोचर** ●

कुछ व्यक्तित्व काल और समय की सीमाओं से परे होते हैं। वे हमसे कभी दूर नहीं होते, बल्कि उनके आकार निराकार में अदृश्य हो जाते हैं, पर उनकी गूँज सदियों तक महसूस की जाती है। ऐसी दिव्यता को श्रद्धांजलि नहीं दी जाती बल्कि अंतहीन स्तुति की जाती है। जब भावनाएँ प्रबल होती हैं तो शब्दों में व्यक्त होने से नकार देती हैं। गहन संवेदनाओं को मुखरित करने के लिए शब्द-गगन भी लघु पड़ जाता है, फिर भी एक छोटी-सी कोशिश है, स्तुति में दो शब्द प्रस्तुत करने की—

अंतस्तल पर विमल ध्यान धर
महासूर्य इक अस्त हुआ
वरदाई था जो युग तुमसे
उस युग का क्यूं अंत हुआ
चलता सूरज पाँव-पाँव तो
महकाता मरुधर-माटी
उजले से उन पदचापों से
खिलकर मुस्काती घाटी
जीवन पोथी का हर पन्ना
स्वर्ण कणों से सजा हुआ
इक विराट व्यक्तित्व स्वयं ही
सरस्वती से रचा हुआ
संभव नहीं अनंत ओज का
शब्दों में मुखरित होना
शब्दशून्य है कलम आज
है आहत मन का हर कोना
शासनमाता की गाथा
इतिहास सदा दोहरएगा
कालजयी है नाम तुम्हारा
स्वस्तिक नए रचाएगा।

## नवकार मंत्र कार्यशाला का आयोजन

**मुंबई।**

साध्वी संयमलता जी के सान्निध्य में तेरापंथ कन्या मंडल, मुंबई के अंतर्गत चैम्बूर, कन्या मंडल ने स्वस्तिकोत्सव मनाया, जिसमें नवकार मंत्र की महत्ता पर चर्चा की गई। कन्या मंडल ने मंगलाचरण से कार्यक्रम की शुरुआत की। साध्वी मार्दवश्री जी ने कहा कि नवकार महामंत्र सब मंत्रों से सर्वश्रेष्ठ एवं शक्तिशाली मंत्र है।

नवकार मंत्र का श्रद्धा एवं आस्था के साथ स्मरण करना चाहिए। नवकार मंत्र कब, क्यों, कैसे और किस प्रकार करना यह बताते हुए पाँचों पदों की महत्ता एवं क्रम का विस्तार से वर्णन किया। जिज्ञासाओं का समाधान किया गया। कन्या मंडल प्रभारी एवं संयोजिका हिनल बाफना आदि सभी की सक्रिय सहभागिता रही।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
11 - 17 अप्रैल, 2022



✦ *गुरु ज्ञानदाता होते हैं। वे संस्कार भरते हैं, अनुशासन करते हैं। जिनसे कुछ प्राप्त हुआ, उनके नाम को छिपाएँ क्यों?*
**—आचार्यश्री महाश्रमण**

# यूथ अवेकनिंग कार्यशाला का आयोजन

**छापर।**

अभातेयुप द्वारा निर्देशित जागो युवा जागो का आयोजन तेयुप द्वारा तपोमूर्ति मुनि पृथ्वीराज जी स्वामी के सान्निध्य में कालू कल्याण केंद्र में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के सामुहिक संगान से किया गया। सभी का स्वागत तेयुप के अध्यक्ष सौरभ भुतोड़िया ने किया एवं तेयुप के अनेक आयामों के बारे में जानकारी दी।

मुनिश्री ने अपने अभिभाषण में युवाओं को जागरूक होने की प्रेरणा दी। अणुव्रत समिति के पूर्व मंत्री रेखाराम गोदारा के अलावा हनुमानमल चोरड़िया, पार्षद सत्यनारायण स्वामी, मदनलाल गोयल, महिला मंडल की उपाध्यक्षा सरोज भंसाली विशिष्ट रूप से उपस्थित रहे।

तेयुप, छापर के मंत्री राहुल दुधोड़िया एवं चमन दुधोड़िया ने युवकों को जागरूकता के लिए संदेश दिया। परिषद के साथी रमेश दुधोड़िया, रवि दुधोड़िया उपस्थित रहे।

इस अवसर पर आचार्य महाश्रमण चातुर्मास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष मानकचंद नाहटा, भाजयुमो अध्यक्ष प्रकाश दर्जी, दानमल बैद, बिजेंद्र दुधोड़िया, प्रदीप दुधोड़िया, शोभा डोसी सहित अनेक संस्थाओं के गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति रही। परिषद के मंत्री राहुल दुधोड़िया ने सभी का आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन प्रदीप सुराना ने किया।

# १०८ दिन में २१५ रक्तदान शिविर का आयोजन

**विजयनगर।**

अभातेयुप एवं कर्नाटक सरकार के संयुक्त तत्त्वावधान में तेयुप, विजयनगर द्वारा डिस्ट्रिक्ट हेल्थ एवं फेमिली वेलफेयर डिपार्टमेंट एवं कर्नाटका एड्स प्रिवेंशन सोसायटी कर्नाटक सरकार द्वारा आयोजित ब्लड ओन व्हील्स रक्तदान शिविरों का आयोजन किया जा रहा है।

सर्वप्रथम परिषद अध्यक्ष अमित दक ने उपस्थित सभी महानुभावों का स्वागत किया एवं तेयुप द्वारा कृत एमबीडीडी कैंप की जानकारी प्रदान की।

अभातेयुप राष्ट्रीय महामंत्री पवन मांडोत ने कहा कि तेयुप, विजयनगर ने अभातेयुप के सभी आयामों एवं गतिविधियों का निष्पादन सजगता से एवं भव्यता से किया है और रक्तदान के क्षेत्र में तेयुप, विजयनगर ने एक नया इतिहास बनाकर अपना नाम स्वर्ण अक्षरों में अंकित कर दिया है।

मंत्री विकास बांठिया ने कहा कि किसी भी कार्य की सफलता उसके संपादित होने पर आँकी जाती है जहाँ एक तरफ कोरोना की स्थिति थी और रक्त की बहुत किल्लत थी उस समय भी ३० यूनिट प्रति शिविर एकत्रित करना बड़ी बात है। कार्यक्रम के मुख्य प्रायोजक रोशनलाल, दिनेश कुमार, पोखरणा परिवार, सह-प्रायोजक शांतिलाल, प्रकाश, बाबेल एंव प्रायोजक भंवरलाल, राकेश मांडोत का सहयोग मिला।

१०८ दिनों में कुल २१५ रक्तदान शिविरों के समापन दिवस पर अभातेयुप महामंत्री पवन मांडोत, प्रबुद्ध विचारक दिनेश पोखरणा, कर्नाटक सरकार से डीएचओ डॉ० श्रीनिवास, डीटीओ महेंद्र कुमार, डीएस यशोदा, अभातेयुप साथीगण, सभा अध्यक्ष राजेश चावत, महिला मंडल अध्यक्षा प्रेम बाई भंसाली, लायंस ब्लड बैंक एवं स्वामी विवेकानंद ब्लड बैंक से पदाधिकारीगण सहित गणमान्य लोगों की उपस्थिति रही।

# मंगल प्रवेश व आध्यात्मिक मिलन समारोह

**जोधपुर।**

साध्वी कमलप्रभा जी, साध्वी उर्मिला कुमारी जी, साध्वी जिनबाला जी, साध्वी कुंथुश्री जी व साध्वी सत्यवती जी का जोधपुर शहर की सीमा में प्रवेश हुआ। पाद विहार कर महामंदिर उम्मेद राज तातेड़ के निवास पधारे साध्वी जिनबाला जी का महामंदिर स्थित जैन स्कूल में मुनि तत्त्वरुचि जी से आध्यात्मिक मिलन हुआ।

सहविहार करते हुए साध्वी कमलप्रभाजी, साध्वी उर्मिला कुमारी जी पावटा में साध्वी कुंथुश्री जी, साध्वी सत्यवती जी से आध्यात्मिक मिलन करते हुए रातानाड़ा शिव रोड स्थित सुरेंद्र कुचेरिया के निवास पधारे। तेरापंथी सभा, सरदारपुरा अध्यक्ष माणकचंद तातेड़ ने साध्वीवृंद के विहार की जानकारी दी।

मंडोर स्थित जैन दादावाड़ी में विराजित साध्वी कुंथुश्रीजी, साध्वी सत्यवती जी विहार कर महामंदिर स्थित जैन स्कूल पधारे जहाँ विराजित मुनि तत्त्वरुचि आदि से आध्यात्मिक मिलन हुआ। यहाँ से विहार कर पावटा में कांकरिया भवन पधारे।

## समय का सदुपयोग कर व्यक्ति महान...

**(पृष्ठ १५ का शेष)**

गृहस्थ अपनी दिनचर्या में से कुछ समय स्वयं के लिए निकालें। कई बार प्रकृति भी ऐसी स्थिति बना देती है कि टाइम दे देती है। किसी घटना के पीछे वृत्ति निहित होता है। हम हर स्थिति में समता-शांति में रहें। उन स्थितियों से हम सीख ले सकते हैं कि हम धर्म के लिए भी समय लगाने का प्रयास करें। समय मात्र भी गौतम प्रमाद मत करो।

आज नांगलोई आना हुआ। स्थानकवासी परंपरा के मुनिश्री से भी मिलना हो गया। आपकी अच्छी साधना, अच्छा स्वाध्याय चलता रहे।

पूज्यप्रवर का आज स्थानक में प्रवास हो रहा है। स्थानकवासी संत मुनि दिनेश कुमार जी ने पूज्यप्रवर के स्वागत में अपनी भावना अभिव्यक्त करते हुए कहा कि हमने तीर्थंकर को तो नहीं देखा पर तेरापंथ के आचार्यश्री महाश्रमण जी जब विचरते हैं, लगता है तीर्थंकर का विचरण हो रहा है। आज प्रातः आचार्यप्रवर विहार कर आचार्य भिक्षु हॉस्पिटल पधारे। स्थानीय विधायक शिवचरण गोयल ने आचार्यप्रवर का हॉस्पिटल में स्वागत किया। तत्पश्चात एस०एस० जैन स्थानक पधारे जब श्रमण संघ के मुनि अमर जी एवं मुनि दिनेश कुमार जी ने आचार्यप्रवर का स्वागत किया।

पूज्यप्रवर के स्वागत में नांगलोई महिला मंडल अमित जैन (स्थानक से) दिगंबर समाज एवं अग्रवाल समाज, स्थानीय तेरापंथी सभा, ललिता जैन, राजीव जैन ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

**दायित्व हस्तांतरण समारोह**

दायित्व हस्तांतरण से पूर्व सरदारशहर के श्रावक-श्राविकाओं ने पूज्यप्रवर की अभिवंदना में समूह गीतिका प्रस्तुत की। सरदारशहरवासियों ने दिल्लीवासियों से ध्वज हस्तांतरण की रस्म निभाते हुए ध्वज ग्रहण किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

पूज्यप्रवर ने मंगल पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि दिल्ली में स्वल्प दिनों का प्रवास रहा। आगे सरदारशहर के प्रवास की ओर हम अभिमुख हो रहे हैं। सरदारशहर में आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के महाप्रयाण की तिथि आदि कई कार्यक्रम हैं। दिल्ली के लिए दायित्व पूरा करने व सरदारशहर के लिए दायित्व ग्रहण के लिए हमारा मंगलपाठ है।

## शासनमाता की स्मृति में अर्पित

# जय हो शासनमाता

● **मुनि उदित कुमार** ●

जय हो शासनमाता।
साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा की पावन जीवन गाथा।।

तुलसी गुरुवर की अनुपम कृति प्रतिकृति संघ प्रगति की।
उन्नति पथ पर बढ़ी निरंतर उत्प्रेरक जागृति की।
अप्रमत्त थी जीवन शैली जन-जन शीष झुकाता।।

काव्य सृजन की कला अनूठी मन को छूने वाली।
मानव मन को भावित करती प्रवचन शैली निराली।
अनगिन है अवदान तुम्हारे, कोई माप न पाता।।

तीन-तीन गुरुओं की सेवा एकनिष्ठ हो साधी।
सतियों की संभाल खूब की दृष्टि सदा आराधी।
कुशल प्रबंधन आत्मिक स्पर्शन अंतस को छू जाता।।

सतीशेखरा का पथदर्शन याद सदा आयेगा।
वत्सलता की मूरत को जग नहीं भूल पायेगा।
मंगल भावों की माला चरणों में उदित चढ़ाता।।

**लय : संयममय जीवन हो---**

The mountains went silent
The ocean came to standstill...
The birds' chirping came to halt
The clouds forgot their drill...

We too bow to that divine light
Who removed our nigritude...
Lets revere the holy soul
And show our humble gratitude...

There is no night without dawning
No winter without a spring
And beyond the dark horizon
Her soul just went floating...

That twinkling eye, whose sunny beam
My memory would not cherish less;
And oh, that smile! whose joyous gleam
Nor mortal language can express...

How can I bid farewell to her
To all my fondest thoughts that can be,
Within my heart they still shall dwell;
And they shall cheer and comfort me...

For those who leave us a while
Have only gone away
Out of a restless, care worn world
Into a brighter day...

Don't think of her as gone away,
her journey's just begun
Life holds so many facts,
this earth is only one...

Just think of her as resting
from all the pains and tears
In a place of warmth where
there are no days or years...

Think how she must be wishing
that we could know today
How nothing but our sadness,
can really pass away...

And think of her as living in
the hearts of those she touched
For nothing loved is ever lost
and she was loved so much...

**— Neelam Sethia**
**President : ABTMM**

# हितकर और श्रेयस्कर का जीवन में समाचरण करें : आचार्यश्री महाश्रमण

**बहादुरगढ़, ३० मार्च, २०२२**

महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी भारत की राजधानी दिल्ली को अपने पावस प्रवास से उपकृत कर आज १४ किमी का विहार कर हरियाणा राज्य के बहादुरगढ़ में पन्नालाल बैद के निवास पर पधारे।

अनंत आस्था के आस्थान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि शास्त्र में बताया गया है कि आदमी सुनकर कल्याण और पाप को जानता है। जो श्रेय है, उसका समाचरण करें।

आदमी के पास श्रोतेन्द्रिय होती है और भी पंचेन्द्रिय प्राणियों के कान होते हैं। देव, मनुष्य, तिर्यंच, पंचेन्द्रिय एवं नारकीय जीवों के पास श्रोतेन्द्रिय होती है। सुनना ज्ञान का एक माध्यम है। आदमी अच्छी और बुरी बातों को भी सुन लेता है। गलत को भी जान लेना अपेक्षित होता है, ताकि आदमी गलत से दूर रहकर बच सके। संतों-गुरुओं के प्रवचन को कितने लोग सुनते हैं।

प्रश्न है कि सुनने के बाद जान लिया फिर क्या करना चाहिए। जो गलत है, उसे छोड़ना चाहिए। जो अच्छा, सही, हितकर, श्रेयस्कर है, उसका समाचरण आदमी को करना चाहिए। आदमी के भीतर अच्छाइयों-गुणों का विकास होना चाहिए।

किसी में अच्छी बातें लगें उसे ग्रहण करना चाहिए, गलत को ग्रहण न करें, यह एक दृष्टांत से समझाया कि हर व्यक्ति में अच्छी-बुरी बातें हो सकती हैं, पर हम उनसे अच्छी बातें ही ग्रहण करने का प्रयास करें।

आदमी सुनता है, जानता है, फिर अच्छा क्या है, उसे ग्रहण करना चाहिए। संतों-गुरुओं का प्रवचन सुनना भी अच्छा है। जीवन में कितना उतारेगा यह बाद की बात है। सुनने से उतने समय आदमी पापों से बच सकता है। जितना समय प्रवचन सुनते हैं, उतना समय तो सार्थक और धर्ममय हो जाता है। बार-बार सुनने से कोई ऐसी बात मन को छू जाए कि आपके जीवन में भी परिवर्तन आ सकता है। इसलिए संतों का अच्छा प्रवचन सुनना लाभ का सौदा हो सकता है।

साधु को भी प्रवचन करने से लाभ है। श्रोता प्रवचन को जीवन में उतारे न उतारे पर वक्ता अगर अनुग्रह-निर्जरा की भावना से परोपकार की भावना से प्रवचन करता है, तो साधु को तो निर्जरा का लाभ हो ही जाएगा। साथ में ज्ञान भी और पुष्ट हो जाता है। सुनने वाले तीन तरह के होते हैं—सोता, श्रोता और सरोता। आचार्य भिक्षु एवं आसोजी श्रावक के प्रसंग से समझाया कि गुरु का तो काम होता है, प्रेरणा-प्रतिबोध देना, ज्ञान में आगे बढ़ाना।

गुरु-गुरु में अंतर होता है। गु का अर्थ है—अंधकार और रू का अर्थ है उसको दूर हटाने वाला। जो अंधकार को दूर कर दे वह गुरु होता है। जीता वही है, जो जागता है। सरोता का तो काम है, गलती निकालना। बात को काटना। आदमी प्रवचन में आए तो सोता या सरोता न बने श्रोता बने। साधु के पास बैठने का एक लाभ यह मिल सकता है कि कुछ सुनने को मिल जाए।

हमारे साधु-साध्वियाँ कितना प्रवचन करते हैं। बार-बार सुनने से कोई ऐसी प्रेरणा भी मिल जाती है कि आदमी के जीवन की दशा और दिशा बदल जाए। अध्यात्म एक ऐसा तत्त्व है, जो शांति का मार्ग है। हिंसा अशांति का मार्ग है, अहिंसा शांति का मार्ग है। शास्त्रकार ने कहा है कि सुनने से हमें कितना ज्ञान होता है। सुनना और देखना ये दो सक्षम माध्यम प्रतीत होते हैं, ज्ञान प्राप्ति के लिए। हम इन दोनों श्रोतेन्द्रिय और चक्षुरिन्द्रिय का अच्छा उपयोग करें। ग्राहक बुद्धि से सुनें ताकि कुछ हम ग्रहण कर सकें। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

# समय का सदुपयोग कर व्यक्ति महान बनने की दिशा में आगे बढ़ सकता है। : आचार्यश्री महाश्रमण

**नांगलोई, २६ मार्च, २०२२**

सरदारशहर के सपूत, दुगड़ कुल के सरताज आचार्यश्री महाश्रमण जी का आगामी २५ अप्रैल से १५ मई तक २१ दिवसीय प्रवास सरदारशहर में होने की संभावना है। सरदारशहर में पाँच विशेष कार्यक्रम पंचामृत के नाम से घोषित हैं, साथ में पूज्यप्रवर को पूरे धर्मसंघ द्वारा 'युगप्रधान' अलंकरण से भी नवाजा जाएगा।

इस हेतु सरदारशहर प्रवासी अपने जन्म भूमि के लाड़ले को अपनी जन्मभूमि में पधारने हेतु अर्ज करने आए हैं, ध्वज-स्थानांतरण के दायित्व को ग्रहण करने आए हैं। महामनीषी-महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने इस अवसर पर मंगल पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि शास्त्र में कहा गया है कि जैसे वृक्ष का पका हुआ फल रात्रियाँ बीतने पर गिर जाता है, इसी प्रकार मनुष्यों का जीवन है। वह भी एक दिन समाप्त हो जाता है। यह एक तथ्य-स्थिति शास्त्रकार ने बताई है।

इस स्थिति को जान लें कि जीवन समाप्त होता है, तो करें क्या? यह ध्यान दें। यह बात शास्त्रकार ने बताई कि 'समयं गोयम् मा पमायए। गौतम को संबोधित कर मानो संदेश दिया गया है। हम सभी गौतम स्वामी के परिवार के लोग हैं। पर यह संदेश तो पूरी दुनिया के लिए है कि समय मात्र भी प्रमाद मत करो।

समय एक ऐसा तत्त्व है जो हमें बिलकुल मुफ्त में मिलता है। सबको मिलता है। समय समतावान है, किसी छोटे-बड़े में भेद नहीं रखता। जैसे मेघ बरसता है, तो पहाड़ हो या मैदान या समुद्र सर्वत्र गिर जाता है। कोई भेद-भाव नहीं।

कई बार फ्री में मिलने वाली वस्तु का मूल्यांकन कम हो सकता है। समय का हमें मूल्यांकन करना चाहिए। इसका हम उपयोग कैसे करें? तीन शब्द हैं—सदुपयोग, अनुपयोग और दुरुपयोग। जो आदमी अच्छा कार्य करता है, समय का सदुपयोग कर लेता है। एक आदमी आलस्य में ऐसे ही बैठा है, कुछ करता नहीं, यह समय का अनुपयोग हो जाता है। जो आदमी हिंसा-चोरी आदि गलत काम करता है, वह समय का दुरुपयोग हो जाता है।

समय मात्र भी प्रमाद मत करो, इसका हम यह तात्पर्य निकाल सकते हैं कि समय का दुरुपयोग मत करो। अनुपयोग करना भी उत्तम बात नहीं, उसका सदुपयोग करो।

दुनिया में महान आदमी कौन होता है और तुच्छ आदमी कौन होता है। जो महान कार्य करता है, समय का बढ़िया उपयोग करता है, वह दुनिया का महान् और उत्तम व्यक्ति है। जो समय का दुरुपयोग करता है, वह दुनिया का घटिया आदमी होता है। यह एक कसौटी है। हम सब बढ़िया आदमी बनने का और रहने का प्रयास करें, यह काम्य है।

शास्त्रकार ने कहा कि मनुष्यों का जीवन सूखे पत्ते के समान होता है, गिर जाता है। हम लोग ६ मार्च को दिल्ली आए थे। आज २६ मार्च को दिल्ली के अंतिम दिन के प्रवास में हैं। इस दिल्ली प्रवास के बीच साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी का महाप्रयाण भी हो गया। पके हुए पान का यह उदाहरण है। चतुर्मास की संपन्नता के पश्चात स्वास्थ्य में कुछ तकलीफ हुई। दिल्ली में स्पष्ट जानकारी मिल गई कि स्थिति चिंतनीय है। आदमी का जीवन नश्वर है। हमें इस नश्वरता को जानकर अविनश्वरता की ओर आगे बढ़ने का प्रयास करना चाहिए।

आत्मा अविनश्वर है और शरीर नश्वर है। समय का सदुपयोग करना चाहिए। गृहस्थ को गार्हस्थ्य में रहते हुए व्यवस्था में निर्मलता रहे, यह समय का सदुपयोग है। कमाई करने का तरीका अवैध न हो। कार्य के साथ पाप से विरत रहने का प्रयास करें। यह एक प्रसंग से समझाया कि कार्य, धन और दैनंदन जीवन के साथ धर्म को भी जोड़ दें। कुछ समय भी आध्यात्मिक साधना के लिए लगाएँ। शनिवार की सामायिक कर सकते हैं। नशामुक्त जीवन रहे। रात्रि भोजन से बचने का प्रयास करें। स्वाध्याय कर सकते हैं।

(शेष पृष्ठ १४ पर)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
11 - 17 अप्रैल, 2022



✦ *हम अहिंसा की साधना करते हुए कषाय को प्रतनु करने का प्रयास करें।*

**—आचार्यश्री महाश्रमण**

## राष्ट्रपति भवन में महामहिम राष्ट्रपति एवं आचार्यप्रवर की भेंट

# अर्थ और काम पर धर्म का अंकुश रहना चाहिए : आचार्यश्री महाश्रमण

**कीर्तिनगर, दिल्ली, २८ मार्च, २०२२**

जन-जन का कल्याण के लिए निरंतर गतिमान तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम अधिशास्ता सोमवार को राष्ट्रपति भवन पधारे। भारत के प्रथम नागरिक महामहिम राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद के आग्रह पर आचार्यप्रवर राजपथ होते हुए राष्ट्रपति भवन पहुँचे।

आचार्यप्रवर के आगमन से प्रफुल्लित महामहिम राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद आचार्यश्री महाश्रमण जी के महाश्रम की प्रशंसा कर प्रणत हो रहे थे। ५० मिनट के वार्तालाप में राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद एवं आचार्यश्री महाश्रमण जी में आध्यात्मिक एवं समसामायिक चर्चा हुई। राष्ट्रपति ने मुलाकात के दौरान बिहार के राज्यपाल कार्यकाल की मुलाकात की चर्चा की। राष्ट्रपति के निवेदन पर आचार्यप्रवर ने वहाँ गोचरी की भी कृपा करवाई। गोचरी करवाकर महामहिम स्वयं को कृतार्थ महसूस कर रहे थे।

तदुपरांत वहाँ से विहार कर आचार्यप्रवर राजेंद्र नगर स्थित तेजकरण सुराणा के निवास स्थान पर पधारे। मुख्य प्रवन में महान कीर्तिधर आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारी दुनिया में जन्म और मृत्यु एक सच्चाई है। जन्म है तो मृत्यु भी अवश्य होगी ही। जन्म और मृत्यु के बीच में जीवन होता है।

आज मैं राष्ट्रपति भवन गया था। राष्ट्रपति जी से मिलना हुआ व कुछ वार्तालाप भी हुआ। अध्यात्म की चर्चा चली। राष्ट्रपतिजी की भी कुछ जिज्ञासाएँ थीं। जन्म-मरण के विषय में बात चली कि जन्म लेना कब शुरू हुआ? किसके कितने जन्म हो गए। जन्म-मरण का प्रारंभ बिंदु नहीं है। किसी-किसी जीव के जन्म-मृत्यु के चक्र का अंत अवश्य हो सकता है। अनंत-अनंत काल से हमारी आत्माएँ जन्म और मरण के चक्र में चल रही हैं।

मैंने उन्हें जैन धर्म के आत्मवाद और कर्मवाद की बात बताई। मोहनीय कर्म जितना प्रबल बन जाता है, आदमी पापी बन जाता है। मोहनीय कर्म जितना-जितना हल्का पड़ता है, उतना-उतना जीव आध्यात्मिक बन जाता है।

जैन धर्म में वीतराग शब्द आता है, तो श्रीमद्भगवत गीता में स्थितप्रज्ञ शब्द आता है। जैन धर्म में राग-द्वेष की बात बताई गई है, तो गीता में काम और क्रोध की बात बताई गई है। श्रीकृष्ण और अर्जुन के इस संवाद को विस्तार से समझाया कि वो कौन-सा तत्त्व है, जो प्राणी को पाप में धकेल देता है। काम और क्रोध ये दो वृत्तियाँ हैं, जो प्राणी को अपराध की ओर ले जाती हैं।

सद्भावना, नैतिकता, नशामुक्ति की बात चलीं। अहिंसा यात्रा समापन की भी बात चली। मैं दिल्ली में होते हुए भी आपके पास आ नहीं सकता। यातायात की असुविधा हो जाती है। आतिथ्य सत्कार भी करना चाहा। बाद में उनके हाथ से गोचरी ली। राष्ट्रपति जी की इच्छा थी कि मिलना हो जाए, तो उनसे मिलना हो गया।

जीवन और मृत्यु के बीच जीवन होता है। धातव्य यह होता है कि आदमी जीवन कैसे जीता है। जीवन में धार्मिकता-आध्यात्मिकता है या नहीं। जीवन में धर्म की संपदा कितनी है, वो खास बात है। धन की संपदा है, वो साथ चलने वाली नहीं है। धर्म का फल साथ में जा सकता है। आदमी सोचे कि मैं धन के लिए कितना करता हूँ और धर्म के लिए कितना करता हूँ।

धन के साथ धर्म को जोड़ दूँ। धन के अर्जन में मेरे धर्म की चेतना है या नहीं। नैतिकता, प्रामाणिकता, सच्चाई कितनी है। धन के साथ धर्म जुड़ जाता है, तो धन भी अपवित्र होने से बच सकता है। धन के साथ अधर्म जुड़ने से धन अपवित्र हो जाता है।

अर्थ और काम गार्हस्थ्य में चलते हैं, इन पर धर्म का अंकुश रहना चाहिए। जीवन रूपी रथ के दो पहिये अर्थ और काम हैं, जीवन के रथ में ज्ञान का प्रकाश भी हो और साथ में धर्म के अंकुश रूपी ब्रेक भी हों, वरना जीवन में तनाव आ सकता है।

आदमी को जीवन जीना है, तो शांति का जीवन जीए। आध्यात्मिक आनंद के साथ जीए तो अच्छी बात है। जीवन में दुःख-संताप या तनाव है, चिंता और भय है, वह जीवन बढ़िया नहीं। जीवन-विज्ञान हमें जीवन कैसे जीएँ का संदेश देता है। आध्यात्मिक साधना में भी कुछ समय लगाना चाहिए। आदमी व्यस्त रहे, पर अस्त-व्यस्त न रहे। शांति रहे।

जीवन हमारा आनंदमय-शांतिमय रहे, ऐसी जीवन की शैली रहे। कल की चिंता कल करें। कल का ज्यादा भरोसा नहीं। जो काम आज करना है, उसे कल पर न छोड़ें। कल पर वही आदमी काम छोड़ता है, जिसकी मौत के साथ दोस्ती हो।

आदमी जागरूक रहे कि धर्म का काम कल पर न छोड़े। हमारा ये जीवन भी अच्छा रहे और आगे का जीवन भी अच्छा रहे, ऐसा जीवन हम जीएँ।

दोपहर में राजस्थान की पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे आचार्यप्रवर की सन्निधि में उपस्थित हुई। उन्होंने शासनमाता कनकप्रभाजी को श्रद्धांजलि समर्पित कर आचार्यप्रवर से आशीर्वाद प्राप्त किया।

आज यहाँ सुराणा परिवार में आना हुआ है। पूरे परिवार में धर्म के संस्कार रहें, मंगलकामना।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में सिद्धार्थ सुराणा ने अपने जीवन के अनुभव सुनाए। परिवार की महिलाओं ने स्वागत गीत की प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

## यादें... शासनमाता की - (३)

● **साध्वी स्वस्तिक प्रभा** ●

६ मार्च, २०२२, परम पूज्य आ०प्र० प्रतिदिन की तरह प्रातः करीब ७ बजे सा०प्र० के पास पधारे और नीचे बैठकर वंदना की। वंदना के पश्चात–

**सा०प्र० :** आचार्यश्री पधारे तब नीचे नहीं विराजे, खड़े-खड़े ही वंदना करा लेवें। फिर लगभग ६:३० बजे पुनः आ०प्र० पधारे।

**सा०प्र० :** बहुत बड़ी कृपा करवाई, दूसरी बार पधारे।

**आ०प्र० :** हम तो दोपहर में भी यहाँ रह जाएँ, किंतु दोपहर में मेरे पास लोगों की भीड़ अधिक होती है। ऐसे तो यहाँ भी होती है। (साध्वीवर्या जी से) तुम आधा-आधा घंटा से हमें रिपोर्ट देती रहो।

**सा० सुमतिप्रभा :** आ०प्र० एक-एक घंटे से रिपोर्ट ले लें।

**सा०प्र० :** १-१ घंटे से।

**आ०प्र० :** ठीक है, एक-एक घंटे से दे देना, जैसे १० बजे, ११ बजे, १२ बजे---।

**मुख्य नियोजिकाजी :** कभी मैं भी आ जाऊँ?

**आ०प्र० :** अभी तो ये ही (साध्वीवर्या जी की ओर देखते हुए) आ जाएँ। अभी तो क्या दिक्कत है? गुरुदेव के समय भी तो साध्वियाँ आती थीं।

**सा०प्र० :** गुरुदेव कृपा करवाएँ तो सबमें शक्ति आ जाए। प्रत्येक व्यक्ति सारे काम कर समता है। गुरुदेव ऐसी गणित मुझे भी दिलवाएँ।

**आ०प्र० :** हम यहाँ न रहें तो एक-एक घंटा की रिपोर्ट का जिम्मा साध्वीवर्या पर रहे। जरूरत पड़े तो बीच में भी आ सकती है। कदाचित् स्वयं न आए तो साध्वियों को भी भेज सकती है। (साध्वियों से)–सा०प्र० जी आहार आदि कुछ लेते हैं क्या?

**सा० सुमतिप्रभा :** केवल लिक्विड ही ग्रहण करवाते हैं।

**सा०प्र० :** गुरुदेव इतनी मेहनत नहीं भी करवाएँ तो मुझे संतोष है।

**आ०प्र० :** मैं सुबह से लेकर सायं त्याग तक यहीं रहना चाहता हूँ। किंतु मेरे कठिनाई केवल एक ही है–लोग आएँ तो आपके कहीं असाता न हो जाए।जनता की भीड़ आने से आपको दिक्कत होगी?

सा०प्र० ने स्वीकारोक्ति में अपनी गर्दन हिलाई।

**आ०प्र० :** ठीक है। ये भी मन में आता है कि जनता को तो हम नियंत्रित भी कर लेंगे। (साध्वीवर्या से) तुम पास में ही यहीं कहीं बैठी रहो।

दोपहर में २:३३ पर आ०प्र० पुनः सा०प्र० के पास पधारे।

(कल सायं ब्लडप्रेशर कम हो गए, इसलिए रात भर नारोड ११ नंबर पर चला, सा० कल्पलता जी आदि कई साध्वियाँ रात्रि में भिन्न सामाचारी में रही)।

**आ०प्र० :** (सा०प्र० से) – रात की भिन्न सामाचारी की आलोयणा बता दें?

**सा०प्र० :** तहत्।

**आ०प्र० :** २ घंटा जाप-स्वाध्याय।

**अप्पाणमेव जुज्झाहि, किं ते जुज्झेण बज्झओ।**
**अप्पाणमेव अप्पाणं, जइत्ता सुहमेहए।।**

कहा गया–आत्मा आत्मा से युद्ध करो। प्रश्न होता है कि कौन सी आत्मा किसके साथ युद्ध करें? द्रव्य आत्मा तो एक है, पर भाव आत्मा अनेक हैं। हमें कषाय आत्मा, अशुभयोग आत्मा, मिथ्यादर्शन आत्मा से लड़ना है। लड़ने वाली चारित्र आत्मा है, शुभयोग आत्मा है।

**लड़ते-लड़ते कोई मर भी जाए तो वह उसकी विजय हो गई।**
**हमारी चारित्र आत्मा, शुभयोग आत्मा लड़ती रहे। नोमयं ते पसंसामो---**
**मान लो मैं अठाई तो नहीं कर सकता, पर कषाय को तो पतला करूँ।**
**आरक्षित नहीं, कषाय पतला है तो आत्मा की विजय हो सकती है।**

ऐसा करते-करते बहुत पुण्य का भी बंधन हो जाता है। हालाँकि पुण्य की, निदान की भावना नहीं आनी चाहिए। साधु एक तरह से यौद्धा होता है। मोहनीय कर्म को कृश कर दें तो हमारी आत्मा परम गति को प्राप्त हो सकती है। लड़ते-लड़ते कभी चोट भी आ जाए तो फिर लड़ें। लड़ते-लड़ते कभी विजय प्राप्त हो सकती है।

**आ०प्र० :** संयम में साझ (सहयोग) देना भी बहुत बड़ी बात है।

**सा०प्र० :** आचार्यश्री सबको सहयोग दिलवा रहे हैं।

**आ०प्र० :** आपने भी साध्वियों को कितनी चित्त समाधि प्रदान की है, एक बात आती है–आचार्यों के ३ या ५ भव होते हैं, वे कैसे होते हैं? कोई संयम में स्वयं पूरे जागरूक रहते हैं और कितनों-कितनों को संयम का पालन करवाते हैं। वैसे ही सा०प्र० भी लंबे समय तक संयम में साझ दे तो उनके भी भव ३-५ या जो भी हो, कम हो सकते हैं। कई बार कितनी ही तरह की बातें आ जाएँ पर झुंझलाहट नहीं आए। धैर्य से बात करें। सा०प्र० भी बहुत शांति से बात करते हैं। कहते हैं ना कि आदमी पी जाए, कैसे ही।

**मुख्यमुनि :** शंकर ही पी सकता है।

**सा०प्र० :** गुरुदेव का सौंपा हुआ काम सभी कर लेते हैं।

**आ०प्र० :** ये हर किसी के वश की बात नहीं होती।

**मुनि कीर्ति :** सा०प्र० जी का संत-सतियों सब पर प्रभाव है। हर साध्वी के साथ अपनत्व है।

सायं ५:२५ पर मुनि धर्मरुचिजी स्वामी सा०प्र० के पास आए।

**सा०प्र० :** मेरा अधूरा कार्य आपको पूरा करना है।

**मुनिश्री :** आपकी प्रेरणा ने मेरे जीवन में बहुत कार्य किया है।

**सा०प्र० :** गुरुदेव तुलसी की बहुत कृपा आप पर रही।

**मुनिश्री :** आपका भी मेरे बहुत सहयोग रहा है।

**सा०प्र० :** आप स्वास्थ्य का ध्यान रखवाएँ, काम चलता रहे। **(क्रमशः)**

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै. जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज, औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 110 002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक : **दिनेश मरोठी**